दिगन्तर

शिक्षा एवं खेलकूद समिति

वार्षिक प्रतिवेदन

(2012–13)

न्याय और समानता के लिए शिक्षा

अनुवर्ती

- ❖ **पृष्ठभूमि** 03
- ❖ **मुख्य कार्यक्रम**
  - दिगन्तर विद्यालय 06
  - अकादमिक संदर्भ इकाई (तरु) 21
  - शिक्षा विमर्श : शैक्षिक चिन्तन एवं संवाद की पत्रिका 30
  - संदर्भ सहायता इकाई (TRSU) 32
- ❖ **अन्य कार्यक्रम**
  - DFID's ग्लोबल स्कूल पार्टनरशिप कार्यक्रम 35
- ❖ **विकसित शिक्षण सामग्री** 37
- ❖ **सहयोग व भागीदारी** 37
- ❖ **दिगन्तर संरचना** 38
  - कार्यकारी समिति
  - जनरल बॉडी
- ❖ **परिशिष्ट**
  - शिक्षण सामग्री सूची 39
  - कार्यकर्ता विवरण 41
  - दिगन्तर पहुँचना 47

- **परामर्श एवं निर्देशन :** रीना दास
- **सहयोग :** अब्दुल गफ्फार, विश्वंभर, देवयानी, राजेश कुमार व हरिनारायण
- **लेखन :** अशोक कुमार शर्मा

पृष्ठभूमि

दिगन्तर शिक्षा एवं खेलकूद समिति[1] राजस्थान राज्य पंजीकरण अधिनियम 1958 के अंतर्गत वर्ष **1987 से पंजीकृत** एक अलाभकारी स्वयंसेवी संस्था है। दिगन्तर बहुसांस्कृतिक एवं लोकतांत्रिक समाज में बच्चों को बेहतर शिक्षा मुहैया कराने के लिए प्रतिबद्ध संस्था है। एक छोटे से विद्यालय के रूप में दिगन्तर की शुरुआत हुई। श्री डेविड ऑसबरां के विचारों से प्रेरित होकर और उनके ही मार्गदर्शन में साथ सात बच्चों के साथ इस विद्यालय को शुरू किया गया था, जिनकी संख्या जल्दी ही 25 तक पहुँच गई। एक परिवार से प्राप्त निजी वित्तीय सहयोग से संचालित दो शिक्षकों और 25 बच्चों के इस छोटे से विद्यालय में बच्चों से किसी प्रकार का शुल्क नहीं लिया जाता था। **इस विद्यालय की मुख्य बातें थी**– मूल्यपरक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के द्वारा बच्चों में आपसी सहयोग तथा स्वतंत्र चिंतन की क्षमताओं का विकास करना। बच्चों की उपलब्धियों के मूल्यांकन हेतु किसी भी प्रकार की परीक्षा नहीं ली जाती बल्कि इस विद्यालय में मूल्यांकन को बच्चों के सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का ही हिस्सा माना गया।

उक्त शिक्षण प्रक्रियाओं एवं सिद्धान्तों के आधार पर **लगभग 10 वर्षों तक** यह विद्यालय जयपुर शहर में संचालित हुआ। इस दौरान शिक्षकों को प्राथमिक शिक्षा के सैद्धान्तिक व व्यवहारिक पहलुओं का अध्ययन करने तथा समझने का बेहतर अवसर मिला। विद्यालय में **एक ओर** शिक्षा के अभिप्राय व समाज से उसका संबंध तलाशने का काम हुआ। **दूसरी तरफ,** शिक्षा और समाज के विकास के लिए काम कर रहे अन्य लोगों के साथ सम्पर्क एवं संवाद प्रारम्भ हुआ।

इस छोटे से प्रयास ने प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत समूह, संस्थानों व व्यक्तियों का ध्यान आकर्षित किया। इस प्रकार एक छोटे से विद्यालय का शिक्षा में कार्य कर रहे लोगों से व्यापक संबंध स्थापित होना प्रारंभ हुआ। धीरे–धीरे इस विद्यालय के बुनियादी सिद्धान्तों में निहित प्राथमिक शिक्षा की दृष्टि ने अपना आकार लेना शुरू कर दिया।

1986 में, दिगन्तर के साथ जुड़े छोटे अनौपचारिक समूह ने महसूस किया कि इस विद्यालय को ग्रामीण क्षेत्र में जाना चाहिए ताकि अभावग्रस्त बच्चों को अच्छी शिक्षा दी जा सके। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए दिगन्तर ने एक संस्था का रूप लिया और **1987 में 'दिगन्तर शिक्षा एवं खेलकूद समिति' के नाम से पंजीकरण** हुआ। संस्था का कार्यक्षेत्र जयपुर के दक्षिण–पूर्व के गांव व ढाणी को चुना गया।

[1] दिगन्तर संस्था को दिया गया सभी प्रकार का दान/अनुदान आयकर अधिनियम की धारा 10 (23 c)(VI) के अन्तर्गत कर मुक्त है। कानून 1976 के अन्तर्गत विदेशी योगदान (नियमन) पंजीकृत है।

मुख्य उद्देश्य

- बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मुहैया कराने के लिए विद्यालय स्थापित करना एवं उनका संचालन करना।
- आरंभिक शिक्षा से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर शोध कार्य करना तथा उन्हें प्रोत्साहित करना।
- शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत लोगों तथा संस्थाओं को शैक्षिक मदद मुहैया कराना।
- सांस्कृतिक एवं सामाजिक विकास के लिए कार्य करना।

दिगन्तर का शैक्षिक दर्शन

दिगन्तर का मानना है कि शिक्षा का उद्देश्य विवेकपूर्ण स्वायत्तता, सभी के प्रति संवेदनशीलता, लोकतांत्रिक व समतावादी मूल्यों, मानव जीवन की गरिमा, कौशलों को कर्म में परिणत कर पाने की क्षमता तथा श्रम के प्रति सम्मान का विकास करना है। प्राथमिक शिक्षा का अभिप्राय बच्चे को सीखने में आत्म–निर्भर बनाना है।

हमारा विश्वास है कि प्रत्येक बच्चा समाज में जीवनयापन करने के लिए जरूरी क्षमताएं अर्जित करने, जीवन में अपने लक्ष्य तय करने, चुने हुए लक्ष्यों को पाने हेतु राह खोजने, उपयुक्त कार्य करने और इन कार्यों की जिम्मेदारी लेने में सक्षम है। हर इंसान को अपने बारे में सोचने व तय करने का अधिकार है और यह उसका कर्त्तव्य भी है।

अगर कोई समाज समानता के सिद्धान्त को नकारता है, तो उसमें विभिन्न रूपों में शोषण और उत्पीड़न स्वतः ही स्वीकार्य हो जाता है। सामाजिक संसाधनों के वितरण तंत्र पर नियंत्रण तथा सामाजिक सहयोग का फायदा कुछ खास पक्ष/पक्षों की तरफ झुका होता है।

समाज के प्रत्येक सदस्य में विवेकसम्मत स्वायत्तता का विकास से सामाजिक न्याय सुनिश्चित किया जा सकता है। लोगों को स्वायत्त और विवेकशील बनने में मदद के लिए शिक्षा की भूमिक महत्वपूर्ण है।

दुनिया के सभी जीवों के प्रति संवेदनशीलता विवेकसंगत स्वायत्तता का अभिन्न हिस्सा है। मानव जीवन एक सामाज में ही सम्भव है। जीवन में जटिल व पारस्परिक विभिन्न रूपों को बनाए रखने के लिए सभी प्राणियों के प्रति लिए संवेदनशीलता और सम्मान इंसानी समाज के लिए अनिवार्य है। इसलिए संवेदनशीलता को शिक्षा के उद्देश्य के रूप में शामिल करना महत्वपूर्ण है।

समानता पर आधारित ऐसे समाज को बनाए रखने के लिए, जिसमें व्यक्ति अपने बारे में सोच सके और अपने निर्णय खुद ले सके, एक–दूसरे के प्रति सम्मान और विचारों का आदान–प्रदान नितान्त आवश्यक होगा। बिना शर्त सभी के लिए समान भागीदारी और निष्पक्ष व विवेकसंगत बातचीत की प्रतिबद्धता एक महत्वपूर्ण लोकतांत्रिक मूल्य है। किसी भी विवेकसंगत बातचीत में निर्णय लेने के लिए साझा मापदण्ड की जरूरत होती है। इस बातचीत को जारी रखने तथा उपयोगी बनाने के लिए प्रतिभागियों में समालोचनात्मक चिन्तन कर पाने की काबिलियत व उसके बारे में प्रासंगिक जानकारी का होना लाजमी है।

इसके साथ ही सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन में व्यक्ति के उत्पादक योगदान के लिए शिक्षा में विभिन्न कौशलों के विकास और उनके प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण की भी अनदेखी नहीं की जा सकती।

इन विचारों के आधार पर इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सभी बच्चों को शिक्षा के अवसर मुहैया कराने के लिए अब तक यथोचित कामयाबी के साथ दिगन्तर एक संघर्षरत संस्था है।

हम एक ऐसे बहुलवादी व लोकतांत्रिक समाज की कल्पना करते है जो सभी लोगों के लिए न्याय, समानता, स्वतंत्रता और मानव गरिमा का रक्षक हो। दिगन्तर शिक्षा के माध्यम से, वैचारिक स्वायत्तता तथा विचारों को कर्म में परिणित करने का साहस प्रदान करता है, इसी सपने को पूरा करने में अपना योगदान करता है।

दिगन्तर विद्यालय

आरंभिक शिक्षा में बेहतर विकल्प तलाशने तथा विकसित करने के लिए संस्था द्वारा 1978 से प्रयास किये जा रहे है। जयपुर शहर के ग्रामीण इलाके में दिगन्तर विद्यालय का संचालन किया गया। इस विद्यालय का बेहतर संचालन करते हुए शैक्षिक सिद्धान्तों, नीतियों, उपयुक्त शिक्षण सामग्री और शिक्षकों की शिक्षा के लिए सतत रूप से काम किया गया। शिक्षा के स्वरूप तथा उद्देश्यों पर समुदाय के साथ नियमित संवाद करते हुए विद्यालय संचालन में उनकी सक्रिय भागीदारी पर विशेष बल दिया गया।

वर्तमान में, जयपुर शहर के पास खो–रेबारियान, खोह, उदयपुर गिलरिया तथा भावगढ़ बंध्या गाँव में दिगन्तर द्वारा दो विद्यालय संचालित हैं। सात बच्चों के साथ आरम्भ इस विद्यालय में अभी पाँच–सौ से भी अधिक बच्चे अध्ययन कर रहे हैं।

दिगन्तर विद्यालय में–

- बच्चों को अपनी गति से सीखने की स्वतंत्रता है। बच्चे अपने अनुभव व क्षमताओं के आधार पर एक–दूसरे के सहयोग से सीखते हैं। इसलिए यहां बच्चों को कक्षाओं में बांटने की बजाय उनके स्तरानुकूल समूह बनाए गए हैं।
- विद्यालय का सचेत प्रयत्न रहता है कि शैक्षिक सिद्धान्त और शिक्षण प्रक्रिया में कोई फर्क ना हो। हमारा मानना है कि इन प्रयासों से आरंभिक शिक्षा को समझने तथा बेहतर विकल्प तराशने में महत्वपूर्ण योगदान मिला है।
- बच्चों से किसी प्रकार का शुल्क नहीं लिया जाता है।
- इन प्रयासों को व्यापक स्तर पर न केवल समर्थन मिला है, बल्कि लोगों ने इन विचारों को अपनाना भी शुरू कर दिया हैं।
- आज राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 में जिस शिक्षाक्रम, शिक्षण विधा तथा सतत व व्यापक मूल्यांकन को स्कूलों में प्रयोग में लाने की बात की गई है उन्हीं सिद्धान्तों व विचारों की तर्ज पर **1988 से** यह विद्यालय संचालित है।
- विगत **35 वर्षों से** संचालित यह विद्यालय देशभर में शिक्षा में वैकल्पिक सोच के साथ कार्यरत संस्थाओं के लिए एक रोल मॉडल के रूप में उभरा है।
- लगभग 05–06 किलोमीटर के दायरे में स्थित आस–पास की **28** ढाणियों से बच्चे अध्ययन के लिए आते हैं जबकि वहाँ आस–पास सरकारी और निजी स्कूले भी हैं।

- उच्च प्राथमिक शिक्षा में अर्जित अनुभवों के आधार पर उच्च माध्यमिक शिक्षा के लिए बेहतर विकल्प तलाशने का काम आरम्भ किया गया जिसमें विशेषतौर पर बालिकाओं को उच्च शिक्षा पाने में मदद की जा रही है।
- इस क्षेत्र की बालिकाएं उच्च शिक्षा अर्जित करने से वंचित रह जाती हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए बालिकाओं व समुदाय की पहल पर दिगन्तर विद्यालय में उच्च माध्यमिक स्तर पर शिक्षण प्रारम्भ हुआ।

- माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक शिक्षा अर्जित कर लेने पर इन बालिकाओं को NIOS द्वारा प्रमाण पत्र मिलता है।
- बच्चे प्राथमिक से उच्च माध्यमिक स्तर तक **कुल 19 समूहों** में पढ़ाई कर रहे हैं जिसमें **12** समूह प्राथमिक, **04** समूह उच्च प्राथमिक, **02** समूह माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक स्तर में **01** समूह है।
- संस्था निदेशक द्वारा निर्देशन पर कार्यकारी निदेशक, अकादमिक समन्वयक व प्रबन्ध समूह द्वारा शिक्षकों को नियमित अकादमिक व व्यवस्थात्मक मदद मिलती है।

"It was heartening to see students and working together in a non threatening environment and creating space for dialogue and contestation kinds to the entire team for their efforts of interesting sharing and learning. Thanks for hosting us."

-Deepika Papneja,
Lady Shri Ram College for woman,
New Delhi

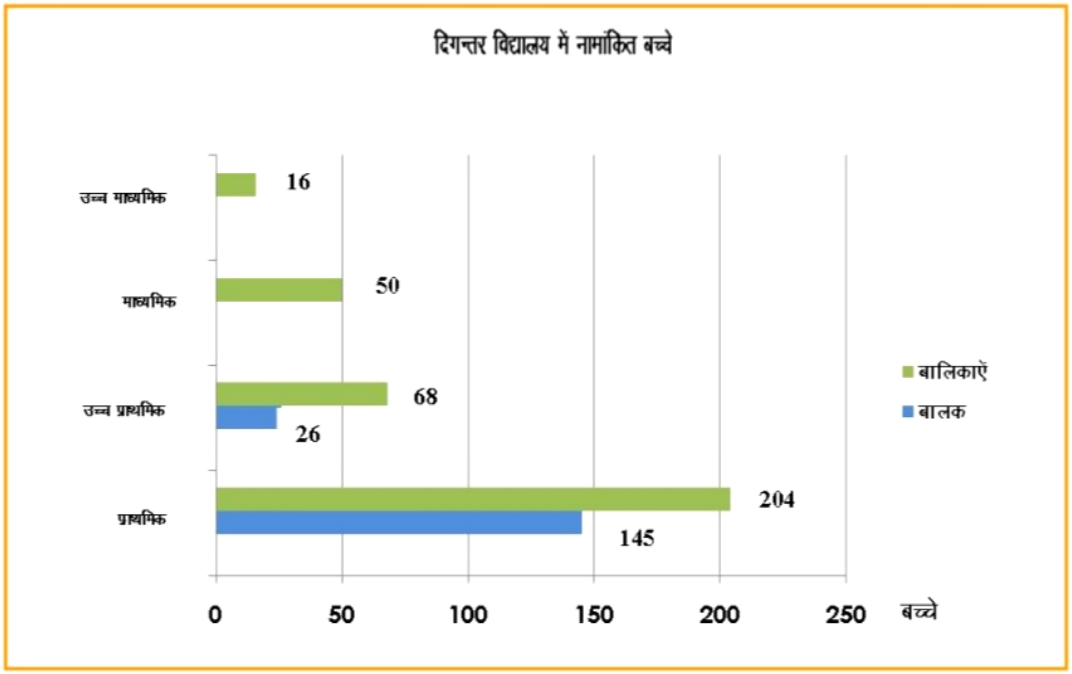

वर्ष 2012–13 की मुख्य गतिविधियाँ

(क) शिक्षक क्षमतावर्द्धन कार्यशालाएं

दिगन्तर विद्यालय के अकादमिक गतिविधि पंचाग में शिक्षक कार्यशाला का महत्वपूर्ण स्थान है। यह कार्यशालाएं अपने काम का आत्मावलोकन करने, सतत क्षमतावर्द्धन और आगामी शैक्षिक गतिविधियों की तैयारी के लिए शिक्षकों को एक अवसर प्रदान करती है। इस वर्ष **एक** लम्बी अवधि (30 दिन) के लिए **ग्रीष्मकालीन, दूसरी** अल्पावधि (10 दिन) के लिए **शीतकालीन कार्यशाला** के अलावा इस सत्र में विषय शिक्षण आधारित, शिक्षण समाग्री के विकास, अनुभव लेखन इत्यादि कार्यशालाओं **(07)** का आयोजन हुआ है। इन कार्यशालाओं से शिक्षकों को अपेक्षित मदद मिली है जिसका संक्षिप्त विवरण निम्न है–

◈ ग्रीष्मकालीन कार्यशाला ◈

01 से 30 जून 2012 तक आयोजित इस कार्यशाला में शिक्षाक्रम, सतत एवं समग्र मूल्यांकन, विज्ञान शिक्षण के उद्देश्यों व तरीकें तथा शिक्षण सामग्री निर्माण इत्यादि पर काम किया गया। कार्यशाला दौरान किये गए काम व उसका प्रभाव कुछ इस प्रकार है–

- अंग्रेजी शिक्षण के लिए दिगन्तर विद्यालय द्वारा विकसित शिक्षाक्रम पर चर्चा कर समझा तथा परिष्कृत किया।
- उच्च प्राथमिक के लिए विषयानुसार शिक्षाक्रम में विषय की प्रकृति, उद्देश्य, पाठ्यक्रम और शिक्षण के तरीकों का समावेश किया गया।
- विभिन्न शिक्षाक्रम तथा पाठ्यक्रम का अध्ययन कर शिक्षकों ने CCE प्रपत्रों पर साझी समझ बनायी।
- विद्यालय की जरूरत और उद्देश्यों पर विचार–विमर्श हुआ।

- संदर्भ व्यक्ति कोकिल जी के साथ शिक्षकों ने व्यक्तित्व विकास पर चर्चा की तथा जीवन की समस्याओं व समाधान के तरीकों पर मंथन किया।
- खेजड़ी सर्वोदय संस्थान से संश्री उन्नीथान के साथ चर्चा से सम्भागियों को बच्चे के स्वास्थ्य के बारे में जानकारी मिली।

- विज्ञान शिक्षण के मायने और तरीकों पर शिक्षकों ने विमर्श किया है। विज्ञान के विभिन्न प्रयोग करके देखें तथा सन्दर्भ व्यक्ति वैभव जी के साथ बातचीत कर वैज्ञानिक दृष्टिकोण को समझने का प्रयास भी किया है।
- एक–दूसरे की मदद से आगामी सत्र की तैयारी स्वरूप शिक्षण सामग्री का पैकेज तैयार किया।

ग्रीष्मकालीन कार्यशाला में ग्लोबल पाटर्नरशिप कार्यक्रम के विकास पर बातचीत हुई। प्रतिदिन सभा, स्वतंत्र व रचनात्मक लेखन और कला सत्र का आयोजन से शिक्षकों की क्षमतावर्द्धन में मदद मिली। जून माह में काफी गर्मी के बावजूद यह कार्यशाला शिक्षकों की उम्मीद अनुरूप कारगर रही। उनके मुताबिक कार्यशाला विविधतापूर्ण तथा सीखने की दृष्टि से उपयोगी रही।

◈ शीतकालीन कार्यशाला ◈

03 से 11 जनवरी 2013 दौरान आयोजित कार्यशाला शिक्षकों के क्षमतावर्द्धन और शिक्षण सामग्री के विकास की दृष्टि से उपयोगी रही। इस कार्यशाला में निम्न काम हुआ है–

- गणितीय अवधारणओं (रेखागणित, मापन, दशमलव) पर शुरुआत से लेकर 05 वर्ष तक शिक्षण तरीकों के सन्दर्भ में शिक्षण सामग्री विकसित की गई है। विशेष रूप से हिन्दी, गणित, अंग्रेजी में सामग्री तैयार हुई इससे समूह शिक्षण में मदद मिली।
- उच्च प्राथमिक से उच्च माध्यमिक स्तर पर विषयानुसार शिक्षण बिन्दुओं पर थीम तैयार हुई।

कार्यशाला के दौरान शिक्षकों ने विभिन्न नाटकों की कथा को समझा और नये नाटकों का सृजन किया। साथ ही लेख 'शिक्षण क्या है?' पर विमर्श कर समझने का प्रयास भी किया।

◈ भाषा (अंग्रेजी) शिक्षण ◈

15 सितम्बर 2012 को आयोजित कार्यशाला अंग्रेजी में लिखने की क्षमता के विकास पर केन्द्रित रही। कार्यशाला में अंग्रेजी लेखन के तरीकों पर विमर्श हुआ जिसमें शिक्षकों ने डेविड ऑसबरां की पुस्तकों को समझकर तथा शिक्षण अभ्यास भी किया। इस कार्यशाला से शिक्षकों को अंग्रेजी शिक्षण के दौरान आई दिक्कतों के समाधान खोजने में मदद मिली है।

◈ कला शिक्षण ◈

क्ले कार्य में नफासत तथा नयापन के लिए **13 मार्च 2013** को एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। शिक्षकों ने मिट्टी को गलाने एवं क्ले कार्य के लिए तैयार करने के संदर्भ में मुख्य बातों की ओर ध्यान दिया। कला शिक्षक की मदद से शिक्षकों ने क्ले के विभिन्न मॉडल बनाए जैसे– कुत्ता, जिराफ, गोला, घन–घनाभ, शंकु इत्यादि।

◈ विज्ञान शिक्षण ◈

24 नवम्बर 2012 को आयोजित कार्यशाला में विज्ञान शिक्षण माहौल को समृद्ध बनाने पर विमर्श हुआ जिसमें विज्ञान शिक्षण के उदेश्यों को समझा तथा प्राथमिक स्तर पर विज्ञान शिक्षण के माहौल और शिक्षण की रूपरेखा बनी। बच्चों में जिज्ञासु प्रवृत्ति विकसित हो, इसके लिए बच्चों की जिज्ञासा/सवाल को लेकर शिक्षण आरम्भ करना, बच्चों को प्रयोग करके देखने, परिकल्पना बनाने और निष्कर्ष तक पहुँचने के पर्याप्त अवसर मुहैया कराना इत्यादि पर चर्चा हई।

◈ गणित शिक्षण ◈

29 सितम्बर 2012 को रविकान्त तोषनीवाल के साथ शिक्षकों ने भिन्न के मायने, भिन्न को विभिन्न मॉडल द्वारा प्रदर्शित करने, भिन्न के प्रकार (उचित–अनुचित), समुच्चय भिन्न, भिन्न के जोड़, बाकी व गुणा इत्यादि के शिक्षण के तरीकों पर विचार–विमर्श किया।

◈ पुस्तक अध्ययन व चर्चा ◈

शिक्षकों द्वारा स्वयं के लिए पढ़ने की आदत को बनाए रखना उनके शिक्षण कार्य को बेहतर बनाने में मददगार होता है। दिगन्तर विद्यालय के शिक्षकों ने शिक्षा में नवाचारों को जानने–समझने के लिए पुस्तक अध्ययन सत्र आयोजित किए। **22 व 23 अगस्त 2012** को शिक्षकों ने तोत्तो चान, गणित क्या है? ऐसे थे बापू, शिक्षा और समझ, ईश्वर क्या है? वन विद्यालय की कहानी तथा '0 सम या विषम' इत्यादि का अध्ययन कर चर्चाएं की और उनके केन्द्रीय विचार को समझने का प्रयास किया।

◈ शिक्षण सामग्री के विकास ◈

02 से 08 जुलाई 2012 तक आयोजित कार्यशाला में भाषा और गणित विषय के लिए शिक्षण सामग्री विकसित की गई जिसमें शिक्षकों ने कहानी चार्ट, Action Journey चार्ट, मात्रा व शब्द कार्ड सैट तथा विभिन्न वर्कशीट तैयार की। इस विकसित शिक्षण सामग्री को शिक्षकों ने समूह शिक्षण के दौरान उपयोग में भी लिया।

◈ शिक्षक क्षमतावर्द्धन कार्यशाला ◈

24 नवम्बर 2012 को आयोजित कार्यशाला में शिक्षकों ने अनुभव लेखन की जरूरत व तरीके पर बातचीत की। उन्होंने अपने काम के विश्लेषण में मदद के लिए अनुभव लेखन की जरूरत को चिन्हित किया। इस कार्यशाला में शिक्षकों ने बच्चों की लेखन शैली पर विमर्श किया तथा उसके विकास के लिए योजना भी बनायी।

(ख) विद्यालयी उत्सव व कार्यक्रम

विद्यालय के गतिविधि पंचाग में राष्ट्रीय पर्व के अतिरिक्त विविध गतिविधियों को शामिल किया जाता है। जैसे– कला व विज्ञान प्रदर्शनी, बाल मेला, सांस्कृतिक संध्या, पूर्व विद्यार्थी मिलन, फिल्म देखना, शिक्षक दिवस तथा शाला स्थापना दिवस इत्यादि। विद्यालय में इन समारोह के आयोजन से बच्चे इनके महत्व से परिचित होते है तथा उन्हें एक–दूसरे से सीखने के मौके भी मिलते है। वर्ष 2012–13 दौरान दिगन्तर विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम इस प्रकार है–

◈ राष्ट्रीय उत्सव आयोजन ◈

बच्चों और शिक्षकों द्वारा निम्न राष्ट्रीय उत्सवों का आयोजन किया गया–

- **स्वतंत्रता दिवस**
- **गणतंत्र दिवस**
- **गाँधी जयन्ती**
- **अम्बेडकर जयन्ती**

दिगन्तर विद्यालय में इन अवसरों पर कार्यक्रमों का मंच संचालन बच्चे स्वयं करते है। इस वर्ष भी बच्चों ने इन पर्वों का महत्व बताते हुए कार्यक्रमों का संचालन किया। समुदाय से आए बड़े जनसमूह के समक्ष बच्चों ने मंच से सांस्कृतिक कार्यक्रम (गीत–कविताएं, लघु झलकियां, नाटक, अपने विचार आदि) को प्रस्तुत किया। इन उत्सवों में बच्चों ने भारत की विविधता, संवैधानिक मूल्यों, मौलिक अधिकारों को चार्ट एवं लेखों द्वारा अभिव्यक्त किया। इसके अलावा बच्चों ने वर्तमान समाज में महिलाओं के प्रति नजरिया और स्थिति को दर्शाने वाले तात्कालिक उदाहरणों को चित्रों के माध्यम से बखूबी प्रस्तुत किया। बच्चों द्वारा विभिन्न सम–सामयिक मुद्दों पर अपने विचारों की अभिव्यक्ति के तरीकों ने सभी आगुन्तकों को सोचने व मुक्तभाव से सराहना करने के लिए प्रेरित किया।

"Unique school"

-Risha Bohrah

(APU- Assam, Guwahati)

◈ बाल मेला ◈

बच्चों के आनन्द और नया सीखने के लिए दिगन्तर विद्यालय भावगढ़ में **30 नवम्बर 2012** को दिगन्तर बाल मेला का आयोजन हुआ जिसमें अभिभावक, नजदीकी विद्यालयों के शिक्षक व बच्चे तथा बड़ी संख्या में समुदाय के लोग शामिल हुए। मेले में सजी छोटी–छोटी स्टोलों में बच्चों ने अपनी पंसदीदा चीजों/रचनाओं का प्रदर्शन किया जैसे– पपेट शो, चित्रांकन, सृजनात्मक लेखन, पेपर कटिंग, कशीदाकारी व कढ़ाई, रंगोली व माण्डणा, कबाड़ से जुगाड़, कारपेन्ट्री, नाटक, बंधेज, क्ले इत्यादि। सामूहिक स्सभा में बच्चों ने गीत, कविताओं तथा अभिनय द्वारा अपने विचारों को अभिव्यक्त किया और कार्यक्रम प्रस्तुत किए। सभी आगन्तुकों ने बच्चों के काम और मेहनत की काफी प्रशंसा की। इस बाल मेले ने बच्चों की कल्पना शक्ति को अभिव्यक्ति के लिए सशक्त मंच प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की हैं।

◈ शाला स्थापना दिवस ◈

20 जुलाई 2012 को बच्चों व शिक्षकों ने शाला स्थापना दिवस मनाया जिसमें रतवाली शाला के इतिहास व विकास क्रम को जानने–समझने का प्रयास किया गया। अभिभावक व समुदाय के लोगों ने इस शाला के अनुभवों को साझा किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में बच्चों ने गीत–कविताओं व नृत्य से अपने विचार व्यक्त किये। इस समारोह से नये शिक्षक व बच्चे विद्यालय के अब तक के संघर्षमय सफर अवगत हुए।

◈ फिल्म देखना ◈

फिल्म सभी के लिए आकर्षण का केन्द्र होती है। फिल्म के माध्यम से चित्रों व घटनाक्रम को समझकर विश्लेषण कर पाने में मदद मिलती है। फिल्मों पर चर्चाएं बच्चों को अपने विचारों को व्यक्त करने का अवसर देती हैं। वर्तमान समाजिक संदर्भ पर आधारित फिल्मों (Baby Day Out, बोल, गोड जिला मेरा दोस्त, भूमिका) ने सभी को सोचने के लिए प्ररित किया।

◈ शिक्षक दिवस ◈

सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णणन के जन्म–दिवस **05 सितम्बर** को शिक्षक दिवस के रूप में उत्साह पूर्वक मनाया। विद्यालय में राधाकृष्णणन के जीवनी पर चर्चा हुई। इस दिन बच्चों ने विद्यालय में शिक्षक की भूमिका निभाई। बच्चों द्वारा इस नई भूमिका को जिम्मेदारी पूर्वक और काफी बेहतर ढग से निभाने का प्रयास करते देखना शिक्षकों के लिए सुखद अनुभव रहा। बच्चों ने सामूहिक सभा में शिक्षक के रूप में किये गए काम के अनुभव साझा भी किया।

◈ कला व विज्ञान प्रदर्शनी ◈

दिगन्तर विद्यालय में बच्चे विज्ञान की अवधारणाओं पर मॉडल बनाने और कला के माध्यम से अभिव्यक्त करने में भरपूर रुचि लेते हैं। इसकी एक झलक बच्चों की कलाकृतियों और उनके द्वारा निर्मित विज्ञान मॉडलों को देखने पर मिलती है जिन्हें साझा करने, दूसरों की राय जानने और बच्चों की कल्पनाशक्ति के विस्तार के मकसद से इस वर्ष भी प्रदर्शनी आयोजित की गई। कला प्रदर्शनी में मुख्य आर्कषण का केन्द्र–कबाड़ से जुगाड़ से बना हंस, लकड़ी का स्कल्पचर, दृश्य चित्र, बच्चों द्वारा सृजित साहित्य रहे। कोलाज में विभिन्नता, ग्लास पैटिंग्स की चमक तथा शिल्प कार्य के कौशल ने दर्शकों को काफी प्रभावित किया।

क्र.	प्रदर्शनी	दिनांक
1.	कला	15 दिसम्बर 2012
2.	विज्ञान	28 फरवरी 2013

विज्ञान प्रदर्शनी जैव विविधता पर केन्द्रित रही। जैव विज्ञान से सम्बन्धित मॉडल व प्रयोगों के बारे में बच्चों ने प्रत्यक्ष रूप में करके दिखाया और काफी प्रभावी ढग से उनकी कार्य प्रणाली व कार्य कारण सम्बन्धों के बारे में लोगों को अवगत कराया। विभिन्न सक्रिय मॉडल देखकर दर्शक काफी खुश नजर आए। कार्यक्रम में समुदाय से काफी संख्या में लोगों की उपस्थिति रही। इसके अलावा दिगन्तर कार्मिक, निजी व सरकारी विद्यालयों के बच्चों व शिक्षकों ने भागीदारी कर बच्चों का उत्साहवर्द्धन किया।

◈ पूर्व विद्यार्थी मिलन समारोह ◈

04 नवम्बर 2012 को पूर्व विद्यार्थियों व समुदाय के मध्य संवाद तथा आपसी रिश्ते को मजबूती देने के लिए भावगढ़ विद्यालय में **पूर्व विद्यार्थी मिलन समारोह (चतुर्थ)** का आयोजन किया गया। इस समारोह में उन पूर्व शिक्षकों और छात्रों ने भी भागीदारी की जिन्होंने 1995 से 1996 के दौरान और उसके बाद के वर्षों में दिगन्तर विद्यालय में अध्ययन–अध्यापन किया था। इस समारोह में **मेरा पन्ना, गीत–कविताएं व नृत्य, अनुभव शेयरिंग तथा सामूहिक भोजन इत्यादि गतिविधियां की गई।** रोजमर्रा के कामों से हटकर आयोजित इस समारोह में सभी संभागियों ने हर्षोल्लास से भागीदारी की। पूर्व विद्यार्थियों ने कहा कि– **"अपने विद्यालय में आकर सबसे मिलना बहुत अच्छा लगा। हम सभी काफी दिनों से इस दिन का इन्तजार कर रहे थे। हमें स्कूल के दिन याद आते हैं। कभी उन दिनों को नहीं भूल पायेंगे। आज यहाँ आने से उन्हीं दिनों की याद फिर से ताजा हो गई।"** आज के दिन को स्मरणीय बनाने के लिए सभी आगन्तुकों को पुस्तक (दिवास्वप्न, कठिन है माता–पिता बनना) भेंट की गई।

> **"दिगन्तर के द्वारा शिक्षा में गुणवत्ता लाने में महत्वपूर्ण प्रयास है, इसका प्रभाव कार्यक्षेत्र में दिखता है। ये विद्यालय भविष्य के समाज निर्माण में बहुमूल्य है।"**
>
> –इमरान खान (सीआईएनआई, झारखंड)

◈ सांस्कृतिक संध्या का आयोजन ◈

अब तक के सफर तथा सहयोग को आपस में साझा करने के प्रयास स्वरूप **24 मार्च 2013** को सांस्कृतिक संध्या का आयोजन हुआ। शाला प्रबन्धन समिति के सदस्यों व समुदाय लोगों के साथ कार्यक्रम की रूपरेखा बनी। इस कार्यक्रम में समुदाय से **600 से भी ज्यादा लोग** (महिला व पुरुष) शामिल हुए। आगन्तुकों ने प्रोजेक्टर से दिगन्तर के अब तक के सफर को देखा। प्रदर्शनी में पुरानी तस्वीरें देखकर लोगों ने पुराने दिनों का स्मरण किया।

सांयकालीन अभिभावक बैठक हुई जिसमें अभिभावकों ने बच्चों की शैक्षिक प्रगति पर सन्तोष जाहिर करते हुए बच्चों के विद्यालय आने–जाने में दिक्कतों को शेयर किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम में बच्चों ने गीत–कविताएं, झलकियां व नाटक प्रस्तुत किए। शिक्षक समूह ने भी रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा रचित ऐकला चौलो रे.....गीत का सामूहिक गायन किया। कार्यकारी निदेशक ने विद्यालय के अब तक के सफर के बारे में बताते हुए प्रगति को साझा किया। समुदाय से एक से अधिक लोगों ने मंच पर आकर शिक्षा के क्षेत्र में दिगन्तर के बेहतर योगदान के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने दिगन्तर विद्यालय के विकास में निरन्तर सहयोग का भरोसा भी दिलाया। रात्रि लगभग 8.00 बजे तक लोगों ने कार्यक्रम में भागीदारी की तथा सराहना की।

"Enjoy seeing the enthusiasm of the children and the teacher and the learning taking place"

-Chandita Mukharjee,
Comet Media Foundation, Mumbai

(ग) बाल पंचायत

बाल पंचायत का प्रमुख काम अपने विद्यालय की व्यवस्था संबंधी तमाम निर्णय लेना तथा उनका क्रियान्वयन करना है। बाल पंचायत की गतिविधियां से विद्यालय में बच्चों की राय और सक्रिय भागीदारी को महत्व मिलता है। बच्चे लोकतंत्र में निर्णय प्रक्रियाओं से न केवल परिचित होते बल्कि उन्हें निर्णय लेना सीखने में मदद भी मिलती है। इसी मकसद से दिगन्तर विद्यालय में बाल पंचायत गठित है। इस बाल पंचायत का अपना **'संविधान'** भी है।

इस संविधान के मुताबिक **सितम्बर व मार्च 2013** दौरान विद्यालय में बाल पंचायत का पुनः गठन होता है। इस वर्ष भी भावगढ़ व खो–रेबारियान विद्यालय में लोकतांत्रिक प्रक्रिया अनुसार नये सदस्यों का चुनाव हुआ। उम्मीदवारों को बराबर मत मिलने पर अगले दिन सामूहिक सभा में पर्चियां डालकर नये सदस्यों की घोषणा की गई। बच्चों और शिक्षकों ने रुचि व आनन्द के साथ अपनी जिम्मेदारी निभाई। बच्चे बाल पंचायत के माध्यम से अपने विद्यालय की समस्याओं के समाधान में अब ज्यादा सक्रिय भागीदारी करते हैं। इन गतिविधियों से बच्चे अपनी जिम्मेदारियों के प्रति सचेत हुए हैं उनमें विद्यालय के प्रति अपनत्व का भाव भी पनपा है।

(घ) शैक्षिक भ्रमण

शैक्षिक भ्रमण के माध्यम से बच्चों व शिक्षकों को दुनिया के बारे में जानने की उत्सुकता को न केवल बल मिलता है बल्कि दुनिया को देखने का उनका नजरिया भी बदलता है। साथ ही मिलकर सीखने तथा एक–दूसरे को समझने में मदद मिलती है। इन्हीं उद्देश्यों के फलस्वरूप वर्ष 2012–13 दौरान विद्यालय में बच्चों और शिक्षकों को निम्न जगह जाकर देखने का अवसर मिला–

- चिड़ियाघर व धार्मिक स्थल–चर्च, गुरूद्वारा व मंदिर **(प्राथमिक समूह)**
- जयपुर में स्थित सिटी पैलेस एवं कपूरचंद्र कुलिश उद्यान **(उच्च प्राथमिक समूह)**
- विज्ञान प्रदर्शनी, केवलादेव पक्षी अभ्यारण, घाना व आभानेरी बावड़ी **(माध्यमिक व उच्च माध्यमिक समूह)**
- विक्रमशिला संस्थान, गाँधी आश्रम व साइन्स सिटी, ताजमहल तथा बुलन्द दरवाजा **(शिक्षक समूह)**

(छ) प्रकाशन

विद्यालय में बच्चों व शिक्षकों द्वारा अनुभवों को अभिव्यक्त करने तथा आपस में बांटने के मकसद से दिगन्तर विद्यालय में बाल पत्रिका **बातूनी** तथा **न्यूज लैटर** का प्रकाशन किया जाता है। इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

◈ बातूनी ◈

बच्चों के लिए प्रकाशित यह एक **मासिक पत्रिका** है जिसमें बच्चों को अपनी रचनात्मक व सृजनात्मक क्षमताओं को अभिव्यक्त करने का मौका मिलता है। इस पत्रिका में बच्चों द्वारा निर्मित चित्र, कहानियां, बातचीत का अंश, नये अनुभव, पहेलियां, गीत–कविताएं और अपने विचार इत्यादि प्रकाशित किए जाते हैं। इस वर्ष बातूनी के **13 अंक** (रंगयुक्त) प्रकाशित हुए। इस पत्रिका का न केवल दिगन्तर विद्यालय के बच्चे इन्तजार करते हैं बल्कि यह आस–पास के सरकारी व निजी विद्यालय **(40)** के बच्चों की भी पंसदीदा पत्रिका है। इससे बच्चों के संवाद का दायरा बढ़ा है। यह पत्रिका आस–पास के सरकारी व निजी विद्यालय के बच्चों को भी नई रचना करने के लिए प्रेरित करने का काम करती है।

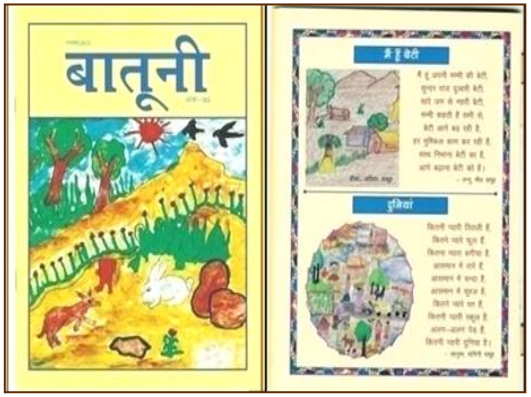

◈ न्यूज लैटर ◈

यह एक **द्विमासिक पत्रिका** है जिसका शिक्षक समूह द्वारा प्रकाशन किया जाता है। इस न्यूज लैटर से अनुभवों को आपस में बांटने में शिक्षकों को मदद मिलती है। अलग–अलग समूह में शिक्षण कार्य करने के बावजूद एक–दूसरे से सीखने तथा शैक्षिक संवाद बनाये रखने की दृष्टि से इस पत्रिका का महत्व बढ़ जाता है। शिक्षक इस न्यूज लैटर का बेसब्री से इन्तजार भी करते है।

इस वर्ष में न्यूज लैटर के **पांच अंक** (अंक 45, 46, 47, 48 व 49 वां) प्रकाशित हुए जिनमें विद्यालय की चिट्ठी, गतिविधियों की जानकारी व तस्वीरों के अलावा शिक्षकों के अनुभवों को साझा करने की कोशिश की गई।

समुदाय सहयोग एवं भागीदारी

(क) संवाद तथा बैठकें

विद्यालय का बेहतर संचालन के लिए समुदाय सहयोग लाजमी है। दिगन्तर समुदाय के साथ नियमित संवाद तथा निकट सम्बन्ध बनाये रखने में यकीन रखता है। अभिभावक एवं समुदाय के लोग समय–समय पर विद्यालय आकर शिक्षकों से विद्यालय संबंधी बातचीत करते हैं। विद्यालय उत्सव व विभिन्न बैठकें आयोजित कर समुदाय के साथ विद्यालय की प्रगति को शेयर कर उनकी राय ली जाती है। इसी प्रयास स्वरूप वर्ष 2012–13 दौरान समुदाय के साथ कुल **28 बैठकें** आयोजित की गई।

बैठकों में काफी संख्या में महिलाएं व पुरुष शामिल हुए। इन बैठकों में समुदाय के लोगों को विद्यालयी गतिविधियों से अवगत कराया गया तथा चुनौतियों पर विचार–विमर्श कर समाधान तलाशने का काम हुआ। जैसे– बच्चों का विद्यालय देरी से आना, कुछ बच्चों की अनियमितता, भवन निर्माण, विद्यालय आने–जाने के लिए रास्ता, पीने का पानी इत्यादि। बैठकों में समुदाय के लोगों को भी अपने विचार व्यक्त करने का मौका मिला। लोगों ने प्राथमिक समूह में उर्दू शिक्षण, बच्चों के आने–जाने के लिए बस तथा महिलाओं के लिए शिक्षा व्यवस्था करने का आग्रह किया।

इसके अलावा समय–समय पर अभिभावकों के घर जाकर शिक्षकों ने बच्चों की प्रगति को साझा भी किया। समुदाय के अपेक्षित सहयोग से दिगन्तर विद्यालय भावगढ़ व खो–रेबारियान का स्वरूप उभरा है।

(ख) समुदाय के साथ शेयरिंग

विद्यालय की वर्तमान स्थिति पर विचार–विमर्श करने के लिए **17 सितम्बर 2012** को खो–रेबारियान विद्यालय में बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में दिगन्तर विद्यालय के सभी शिक्षक, समन्वयक दल, सहायता इकाई समूह और संस्था निदेशक के अलावा विद्यालय विकास में अहम भूमिका निभाने वाले समुदाय अभिभावक भी शामिल हुए।

सांयकालीन इस बैठक में कार्यकारी निदेशक ने विद्यालय के अब तक के सफर से अवगत कराया। अभिभावकों ने भी अपने अनुभवों को साझा किया। बैठक में समुदाय के लोगों ने विद्यालय के विकास के लिए हर संभव मदद का भरोसा दिलाया। समुदाय ने लगभग **छः** बीघा जमीन संस्था को सामाजिक कार्यो को करने के लिये लिखित में स्वीकृति प्रदान की।

(ग) नुक्कड़ नाटक का मंचन

समुदाय के साथ शैक्षिक संवाद को बढ़ावा देने, शिक्षा के प्रति उनके नजरिये को समझने के लिए शिक्षकों ने समुदाय में नुक्कड़ नाटक मंचित किया। नाटक मंचन के एक दिन पूर्व शिक्षकों ने गांव व ढाणी में फेरी लगाकर नाटक के कथासार के बारे में बताया तथा मुख्य जगह/नुक्कड़ पर नाटक के पोस्टर भी प्रदर्शित किए गए। शिक्षकों ने पूरे उत्साह और विश्वास के साथ **'अंधेर नगरी चौपट राजा'** नाटक अभिनीत किया। दर्शकों को नाटक और मंचन के तरीके ने काफी प्रभावित किया। समुदाय के लोगों का कहना था कि– **"तानाशाही व्यवस्था में समानता और न्याय का कोई स्थान नहीं है। हमें सोच–समझकर अपना काम करना चाहिए।"**

(घ) नववर्ष के उपलक्ष्य में

दिगन्तर विद्यालय का समुदाय के साथ काफी घनिष्ठ सम्बन्ध है। समय–समय पर शिक्षक समुदाय के सामाजिक कार्यक्रमों में शामिल भी होते है। **नववर्ष 2013 के आगमन** पर विद्यालय में बच्चों द्वारा बनाए कार्डस को प्रिन्ट करवाया गया। शिक्षकों ने प्रत्येक बच्चे के घर जाकर अभिभावकों को नववर्ष की शुभकामनाएं व्यक्त की और बच्चों द्वारा निर्मित कार्ड दिया।

विद्यालय प्रबन्धन समिति का पुनर्गठन तथा सहयोग

भावगढ़ तथा खो–रेबारियान विद्यालय में शिक्षा अधिकार अधिनियम अनुरूप विद्यालय प्रबंधन समिति के पुनर्गठन की जरूरत हुई। इसी क्रम में दोनों जगह अभिभावक बैठकें आयोजित (अगस्त व सितम्बर 2012 माह) की गई। इन बैठकों में लगभग **65 से 70 प्रतिशत** अभिभावक शामिल हुए। कार्यकारी निदेशक ने नई समिति गठन के कारणों और गठन प्रक्रिया के बारे में अवगत कराया। इस समिति के विभिन्न पदों और उनकी जिम्मेदारी के संदर्भ में चर्चा हुई। RTE की मंशा और प्रावधान अनुसार दिगन्तर विद्यालय भावगढ़ व खो–रेबारियान में **SMC का नया गठन** हुआ। भावगढ़ विद्यालय में आयोजित बैठक के दौरान अध्यक्ष और कोषाध्यक्ष के लिए आम सहमति नहीं बन पायी। अतः **RTE** प्रावधान के तहत इन दोनों पदों के लिए मतदान किया गया। अब दोनों विद्यालय में **15 सदस्यों की** विद्यालय प्रबंधन समिति गठित है। सत्र 2012–13 में विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्यों के साथ **04 बार** बैठकें हुई हैं।

इन बैठकों में सदस्यों को विद्यालय प्रगति व चुनौतियों से अवगत कराया गया। बैठकों में विद्यालय की मान्यता, बच्चों की उपस्थिति एवं समय पर विद्यालय आने, भवन निर्माण, आय प्रमाण पत्र बनवाने तथा विद्यालयी उत्सव/कार्यक्रम की योजना को साझा करने का काम हुआ। विद्यालय में पानी की व्यवस्था, भवन निर्माण, बच्चों की उपस्थिति तथा अन्य व्यवस्थाएं कर पाने में विद्यालय प्रबंधन समिति का सक्रिय सहयोग मिला है। खो–रेबारियान विद्यालय समिति सदस्यों द्वारा विद्यालय को उच्च प्राथमिक स्तर तक विकसित करने पर के लिए SMC सचिव से आग्रह भी किया।

अन्य संस्था तथा व्यक्तियों के साथ संवाद

विगत **35** वर्षों से संचालित दिगन्तर विद्यालय ने देशभर में अन्य संस्थाओं के लिए अकादमिक मदद के सन्दर्भ केन्द्र के रूप में अपनी पहचान बनायी है। दिगन्तर विद्यालय के शैक्षिक सिद्धान्त और शिक्षण प्रक्रिया व्यापक स्तर पर न केवल समर्थन मिला है, बल्कि देश के विभिन्न प्रान्तों व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर से काफी लोग शिक्षण प्रक्रिया को देखने व सीखने आते हैं। वर्ष 2012–13 दौरान लगभग **32 संस्थान/संगठन से 246 लोग** दिगन्तर विद्यालय में आए जिनमें प्रवाह (जयपुर), CSER (मुम्बई), अजीमप्रेमजी यूनिवर्सिटी (बैंगलोर), TISS (मुम्बई), स्वामी केशवानन्द कॉलेज (जयपुर), AB फाउण्डेशन, मिराण्डा हाऊस (नई दिल्ली), बी.एल.एड. कॉलेज (नई दिल्ली व मुम्बई), अजीमप्रेमजी फाउण्डेशन (बैंगलोर), मेलजोल (मुम्बई), Deptt. of Architecture (पुणे), SCER (मुम्बई), सेन्टक्रिसटोफर (यू.के.), TFI Fellow (पुणे), MMIT, Jaipur तथा Education Resource Society (Allahbad) इत्यादि शामिल हैं।

उपलब्धियां

- गतिविधि कलैण्डर मुताबिक विद्यालयी कार्यक्रम व उत्सव का सफल आयोजन हुआ है। इनमें समुदाय की सक्रिय भागीदारी व जुड़ाव नजर आया है।
- विद्यालय प्रबन्ध समिति और प्रशासन की कोशिश स्वरूप खोरेबारियान विद्यालय को राजस्थान सरकार द्वारा मान्यता मिली है।
- बच्चों की पत्रिका "बातूनी" का न केवल नियमित प्रकाशन हुआ है बल्कि इस पत्रिका ने आस–पास के सरकारी व निजी विद्यालय **(40 से अधिक)** में बच्चों की पंसदीदा पत्रिका के रूप में जगह बनायी है।
- उच्च प्राथमिक स्तर में तीन वर्ष तक के लिए शिक्षाक्रम का प्रथम प्रारूप विकसित हुआ है।
- RTE की मंशा अनुरूप प्राथमिक स्तर के लिए सतत व समग्र मूल्यांकन प्रपत्र विकसित कर उपयोग में लेना आरम्भ कर दिया है।
- RTE अनुसार विद्यालय प्रबन्ध समिति का नया गठन हुआ है। इस नई गठित SMC ने बैठक आयोजित कर विद्यालय विकास संबंधी निर्णय भी लिए हैं।

चुनौतियां

- अभिभावकों के घर विद्यालय से लगभग 6–7 किलोमीटर दूर हैं। इस वजह से बच्चों को विद्यालय आने–जाने में दिक्कत आती है।
- वित्तीय व्यवस्था न हो पाने के कारण भवन निर्माण का काम पूरा नहीं हो पाया। अभी भी विद्यालय के चार समूह कक्ष पर छत डलना बाकी है। इस वजह से बच्चों को दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है।
- विज्ञप्ति व साक्षात्कार प्रक्रिया के बावजूद गणित व संस्कृत के उपयुक्त शिक्षक नहीं मिल पाने के कारण शिक्षण कार्य प्रभावित रहा।

अकादमिक सन्दर्भ इकाई (तरु)

शिक्षा में कार्यरत विभिन्न संस्थानों (सरकारी व गैर–सरकारी), परियोजनाओं तथा दिगन्तर विद्यालय में जरूरत के अनुसार अकादमिक सहयोग करने के लिए **तरु (अकादमिक संदर्भ इकाई)** की स्थापना की गई। तरु के उद्देश्य में यह निहित है कि शिक्षा की सैद्धांतिक समझ को बेहतर बनाते हुए शिक्षा में नई समझ विकसित करना और शैक्षिक परिदृश्य में योगदान करना। तरु के कार्य का दायरा काफी विस्तृत रहा है जिसमें शिक्षा के आधारभूत मुद्दों पर चिंतन, शैक्षिक शोध, शिक्षक प्रशिक्षण, शैक्षिक कार्यशालाएं, शिक्षण सामग्री और शिक्षक संदर्शिकाएं निर्माण इत्यादि प्रमुख हैं।

वर्ष 2012–13 के दौरान तरु द्वारा किये गए कार्यों को समझने की दृष्टि से निम्न मुख्य हिस्सों में बांटकर देखा जा सकता हैं–

(क) अजीम प्रेमजी फांउडेशन द्वारा आयोजित कार्यक्रमों व गतिविधियों की योजना बनाने तथा क्रियान्वयन में सहयोग प्रदान करना।

(ख) सेन्टर फॉर टीचर नॉलेज (सीटीके) कार्यक्रम के तहत 'शिक्षक ज्ञान' एवं 'शिक्षक शिक्षा' को समझने के लिए शोध कार्य करना।

(ग) स्वतंत्र तौर पर गतिविधियों का आयोजन करना उदाहरणार्थ– 'शिक्षा की आधारभूत समझ' कोर्स, शिक्षक प्रशिक्षण आमुखीकरण व एससीईआरटी पाठ्यक्रम की समीक्षा आदि।

उपरोक्त तीनों हिस्सों में आयोजित गतिविधियों का संक्षिप्त विविरण इस प्रकार है–

(क) एपीएफ[2] सहयोग

साझा सहमति फलस्वरूप एपीएफ की कार्यशाला, सेमीनार, प्रशिक्षण, संदर्शिका निर्माण, शिक्षण सामग्री निर्माण आदि के विकास एवं क्रियान्वयन में तरु द्वारा सतत अकादमिक सहयोग किया गया। इस वर्ष तरु साथियों ने निम्न गतिविधियों में भागीदारी व मदद की–

◈सह–विकास कार्यक्रम◈

- कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षकों के लिए विषय आधारित शिक्षक संदर्शिका तथा शिक्षण सामग्री विकसित करना है। इस काम में तरु तथा एपीएफ के फील्ड इकाई के सदस्य शामिल हैं। विषय आधारित समूह में तरु के सदस्य भाषा (हिन्दी एवं अंग्रेजी), विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान समूह का हिस्सा रहे हैं।

[2] Azim Premji Foundation (APF)

इस कार्यक्रम के तहत विगत एक वर्ष के दौरान किये गये काम का संक्षिप्त विवरण निम्न है–

• **सामाजिक विज्ञान समूह** : इस विषय के लिए संदर्शिका व शिक्षण सामग्री विकास के लिए तीन चरणों में कार्यशालाएं (10 दिवस) हुई जिनमें तरु के तीन सदस्यों द्वारा हिस्सेदारी कर विषय की प्रकृति पर समझ बनाने तथा उसकी शिक्षण सामग्री के विकास की रूपरेखा तय करने की कोशिश की गई। इसके अलावा विभिन्न बैठकें आयोजित कर शिक्षण सामग्री निर्माण का कार्य नियमित रूप से किया गया। इस दौरान दो साथियों को अपने व्यक्तिगत कारणों की वजह से तरु से जाना पड़ा। अतः इस कार्य में तरु की तरफ से आगे ज्यादा भागीदारी नहीं हो पायी।

• **विज्ञान समूह** : इस विषय में काम को तीन उपसमूह (भौतिक, रसायन तथा जीव विज्ञान) में किया जा रहा हैं। तरु ने जीव विज्ञान में अपनी भूमिका का निर्वहन किया है। उपसमूह में किये गए काम को साझा करने के लिए विभिन्न शेयरिंग बैठकें तथा कार्यशालाएं आयोजित हुई हैं। शिक्षकों हेतु शिक्षण

सामग्री विकसित करने के लिए इन कार्यशालाओं में विषयानुसार मुद्दों का चुनाव किया गया। बैठकों में सतत रूप से कार्य की समीक्षा व योजना निर्माण का काम हुआ हैं। तरु की जीव विज्ञान समूह में 'कोशिका' (Cell) की संरचना पर कार्य करने की जिम्मेदारी थी। 'जीव विज्ञान' समूह द्वारा विकसित संदर्शिका का धरातल पर परीक्षण करने के लिए विचार–विमर्श हुआ। समय–समय पर आयोजित इन बैठकों व कार्यशालाओं ने किये गए कार्य को एक–दूसरों के साथ शेयर करने तथा काम को गति देने में मदद की हैं। साथ ही साथियों को प्रो. ईज्नक्राफ्ट (Prof. Eisenkraft) से संवाद का मौका भी मिला।

• **भाषा समूह** : अंग्रेजी व हिन्दी के उपसमूह में कार्य किया गया। तरु इन दोनों उपसमूह में शामिल रहा है। विकसित सामग्री को आपस में साझा करने तथा परिष्कृत करने की दृष्टि से विभिन्न कार्यशालाएं तथा बैठकें हुई जिनमें मुख्यतया निम्न काम हुआ–

- भाषा अर्जन (प्रकृति एवं सिद्धान्त) तथा सुनना एवं बोलना (सिद्धान्त एवं अभ्यास) पर सामग्री विकास का काम चुनना।
- 'द्वितीय भाषा के रूप में अंग्रेजी शिक्षण' पर विमर्श।
- भाषा की प्रकृति पर विकसित संदर्शिका (बच्चे कैसे सीखते हैं?) की शेयरिंग तथा समीक्षा कर अंतिम रूप देना।
- भाषा विश्लेषण (व्याकरण) पर लिखे अध्यायों को अन्तिम रूप देना।

उपरोक्त विकसित सामग्री पर सम्पादकीय समूह के साथ विचार–विमर्श के बाद प्रथम चरण का काम लगभग पूरा हो गया है। अब सम्पादन का

काम प्रारम्भ कर दिया गया है। तरु ने दोनों भाषा समूहों में संदर्शिकाओं के संपादन समूह में भी भागीदारी की। दूसरे चरण के लिए तरु द्वारा आधार पत्र (बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं?) विकसित किया गया है।

- **बीआरसी (एपीएफ) अभिमुखीकरण कार्यशाला** : एपीएफ बीआरसी को अकादमिक मदद मुहैया कराने में तरु की सक्रिय सहभागिता रही है। 26 से 30 जून तक उत्तराखंड में आयोजित कार्यशाला में तरु ने भागीदारी कर संकल्पना और क्रियान्वयन में अपेक्षित मदद की गई। इस कार्यशाला में शैक्षिक परिप्रेक्ष्य को समझने पर विशेष ध्यान दिया गया।

- **शोध प्रविधि कोर्स** : एपीएफ शोध केन्द्र द्वारा आयोजित बैठक में तरु ने शोध प्रविधि कोर्स के संचालन की योजना शेयर की। इस बैठक में कुछ सुझावों के साथ तय किया गया कि इस प्रस्ताव को आगे बढ़ाया जाना चाहिए। तरु ने मिले सुझावों पर अमल कर इस प्रस्ताव को एपीएफ शोध केन्द्र के साथ साझा किया। आगे इस कोर्स की सामग्री विकसित कर काम करने की उम्मीद है।

- **सर्टिफिकेट कोर्स** : यूआरसी समूह के साथ मिलकर कुछ सर्टिफिकेट कोर्स के संचालन की योजना बनी है। कुछ कोर्स के विकास तरु द्वारा करने पर सहमति बनी है। इस सिलसिले में तरु ने निम्न कोर्स विकसित किए–

  - **अकादमिक पठन** : इस कोर्स के लिए यूआरसी और तरु का एक साझा समूह गठित हुआ है। प्रथम चरण में तरु ने कोर्स की संकल्पना पर आधार पत्र विकसित कर अन्य सदस्यों से शेयर किया। आधार पत्र को अंतिम रूप देने के क्रम में मिले सुझावों को शामिल कर बैंगलौर में बैठकें आयोजित की गईं। इस आधार पत्र को विकसित करने के उपरांत इसे विश्वविद्यालय के कुछ प्रोफेसर के पास सुझावों के लिये प्रेषित किया गया।

  - **साहित्य शिक्षण** : तरु साथियों ने उच्च प्राथमिक कक्षाओं में साहित्य शिक्षण पर आधार पत्र का प्रारूप विकसित किया है। आगे इसे यूआरसी सदस्यों के साथ शेयर करने की योजना है।

- **शिक्षा दर्शन पर सेमीनार** : एपीयू के 'शिक्षा का दर्शनशास्त्र' विभाग के तत्वाधान में प्रोब सेमीनार की श्रृंखला आयोजित की गई जिसमें राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सेमीनार का आयोजन हुआ। तरु सम्भागी ने इस सेमीनार की योजना एवं क्रियान्वयन में मदद की। राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन देहरादून व जयपुर में किया गया तथा अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन बंगलौर में हुआ। जयपुर आयोजित सेमीनार में तरु के कुछ साथी भी शामिल रहे।

- **विकासात्मक आवश्यकता विश्लेषण** : बिहार सरकार द्वारा डीआईईटी में नव नियुक्त सदस्यों की प्रशिक्षण योजना के मद्देनजर एपीएफ के साथ डीएनए कार्यक्रम (Developemental Need Analysis) चलाया गया जिसमें डीआईईटी फैकल्टी की जरूरत पहचानकर

प्रशिक्षण देने की कोशिश है। इस कार्य के पहले चरण में तरु सम्भागी की हिस्सेदारी रही।

- **पेपर प्रस्तुतीकरण** : भाषा समूह की बंगलौर में आयोजित एक दिवसीय बैठक में तरु की तरफ से 'मानवीय ज्ञान का निर्माण और भाषा' पेपर प्रस्तुत किया गया। बैठक में शामिल एपीयू के प्रोफेसर और यूआरसी के सदस्य के साथ चर्चा हुई जिसमें सरलीकृत रूप में पुनः शेयर करने की सहमति बनी।

- **सह–विकास कार्यक्रम समन्वयक के साथ बैठक** : तरु और एपीएफ की साझा सहमति के फलस्वरूप सह–विकास के लिए सामग्री निर्माण में तरु की भागीदारी रही। इस काम को दिशा व गति प्रदान करने के लिए बैठक हुई जिसमें समन्वयक (सह–विकास कार्यक्रम) और कार्यकारी निदेशक (तरु) ने विचार–विमर्श किया। बैठक के परिणामस्वरूप भाषा समूह के काम में तरु की हिस्सेदारी बढ़ी।

- **समीक्षा बैठक** : एपीएफ के साथ अनुबंध मुताबिक 18 जून 2012 को बंगलौर में 'त्रैमासिक समीक्षा बैठक' हुई जिसमें दिगन्तर से सचिव, तरु कार्यकारी निदेशक तथा शिक्षा–विमर्श के सम्पादक शामिल हुये। बैठक में पिछले कार्यों की समीक्षा के साथ कुछ नये विचार भी उभरे। इस बैठक में शिक्षा–विमर्श पत्रिका की वित्तीय सहयोग पर बातचीत भी हुई।

(ख) सीटीके[3] कार्यक्रम

तरु में सेन्टर फॉर टीचर नॉलेज (सीटीके) कार्यक्रम दिसम्बर 2011 से संचालित है। यह कार्यक्रम पॉल हैम्लेन फांउडेशन, लंदन से वित्तपोषित है। सेवापूर्व शिक्षक प्रशिक्षण में नयी दृष्टि विकसित करने की संकल्पना पर आधारित यह एक दीर्धकालीन कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत पहले वर्ष में एक अध्ययन कर शिक्षक प्रशिक्षक एवं उपलब्ध सामग्री की नजर से यह समझने की कोशिश की गई कि 'शिक्षक को क्या आना चाहिये?' और इसको वो 'कैसे सीखते हैं?'

इस कार्यक्रम के तहत पिछले एक वर्ष में निम्न गतिविधियां आयोजित की गई–

◈सरकारी संस्थानों के साथ विमर्श◈

अलग–अलग राज्य व जिला के सरकारी संस्थानों के साथ बैठक आयोजित कर इस

[3] Centre for Participatory Research and Action for Teacher Knowledge

कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं पर बातचीत हुई जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

• **एससीईआरटी और एसएसए के साथ** : देश के **12 हिन्दी भाषी राज्यों** के एससीईआरटी तथा एसएसए के निदेशकों के साथ विचार–विमर्श हुआ जिसमें कार्यक्रम की संकल्पना और एक वर्ष की कार्ययोजना को साझा किया। बिहार, छतीसगढ, दिल्ली, हरियाणा, चण्डीगढ, हिमाचल, झारखंड, मध्यप्रदेश, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड इत्यादि राज्यों में शिक्षा विभाग के निदेशक को कार्यक्रम सलाहकार समिति में शामिल होने के लिए बातचीत भी की। अधिकांश ने इस विचार को सराहया तथा अपेक्षित मदद के लिए अपनी सहमति व्यक्त की।

• **औपचारिक अनुमति के लिए प्रयास** : दिल्ली, मध्यप्रदेश और राजस्थान राज्य की डीआईईटी और बीएड कॉलेज से डेटा संकलन की अनुमति हेतु एक औपचारिक अनुमति की जरूरत हुई। राजस्थान में सर्वशिक्षा अभियान तथा दिल्ली में एससीईआरटी द्वारा यह अनुमति पिछले वर्ष ही मिल गई लेकिन मध्यप्रदेश में एक से अधिक बार प्रयास के बावजूद लिखित में अनुमति नहीं मिल पाई फिर भी वहां डेटा संकलन में किसी तरह की कठिनाई नहीं आयी।

• **डीआईईटी एवं प्राईवेट कॉलेजों के साथ बैठक** : दिल्ली, मध्यप्रदेश व राजस्थान राज्य में डीआईईटी एवं प्राईवेट कॉलेज के अकादमिक समूह के साथ एक दिवसीय बैठक आयोजित की गई जिसमें दिगन्तर परिचय, कार्यक्रम के उद्देश्य तथा सहयोग की अपेक्षाएं आदि को शेयर किया गया। यह बैठकें डीआईईटी दौसा, आईजीएम कॉलेज (राजस्थान); डीआईईटी विदिशा, जवाहरलाल नेहरू स्मृति महाविद्यालय (मध्यप्रदेश), डीआईईटी मोतीबाग, विद्या ट्रेनिंग कॉलेज (दिल्ली) में आयोजित हुई। इस प्रयास स्वरूप सम्भागियों को कार्यक्रम को समझने में मदद मिली और उन्होंने डेटा संकलन में सहयोग भी किया।

• **एनसीटीई के साथ मीटिंग** : तरु सदस्यों ने एनसीटीई सचिव के साथ दिल्ली में बैठक आयोजित कर इस शोध कार्यक्रम के विचार को साझा किया और साझे प्रयासों के लिए प्रस्ताव रखा परन्तु उस पर आगे कोई जवाब प्राप्त नही हुआ।

• **सामग्री संकलन** : तरु टीम ने **11 हिन्दी भाषी राज्यों** की डीआईईटी, एससीईआरटी और एसएसए कार्यालय से विगतः तीन वर्षों की सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण संदर्शिकाएं, सेवापूर्व शिक्षक प्रशिक्षण कोर्स का पाठ्यक्रम, प्रशिक्षु द्वारा उपयोग मे ली जाने वाली सामग्री और प्रश्न पत्र एकत्रित करने का काम किया।

इन सभी जगह से अन्य सामग्री तो प्राप्त हो गई परन्तु सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण के तीन वर्ष की संदर्शिकाएं तथा प्रश्न पत्र किसी भी राज्य में नहीं मिली। दिल्ली में एनसीईआरटी पुस्तकालय जाकर साथियों ने सामग्री की सूची का संकलन किया जो कार्यक्रम के लिए मददगार होगी।

- **अभिमुखीकरण कार्यशाला** : शिक्षक ज्ञान एवं शिक्षक के सीखने के अवधारणात्मक मुद्दों की समझ के लिए टाटा इंस्टीटयूट ऑफ सोसल साईंसेज् (TISS) के हैदराबाद परिसर में आयोजित कार्यशाला में भागीदारी की। कार्यशाला का आयोजन एवं नेतृत्व प्रोफेसर पद्मा सारंगपाणि एवं उनकी टीम द्वारा किया गया। इस कार्यशाला में शोध के विभिन्न पहलुओं पर विमर्श हुआ।

- **विशेषज्ञ समिति मीटिंग** : देश के सुविख्यात शिक्षाविदों के निर्देशन में परियोजना की विशेषज्ञ समिति का गठन किया गया जिसमें प्रो. कृष्ण कुमार, प्रो. पद्मा सारंगपाणि, प्रो. पूनम बत्रा, प्रो. रोहित धनकर और मनोज कुमार शामिल थे। इस वर्ष में विशेषज्ञ समिति की दो बैठक आयोजित हुई जिसमें एक मीटिंग 30 अप्रैल 2012 को दिगन्तर कैम्पस में और अन्तिम मीटिंग दिल्ली विश्वविद्यालय के अन्तर्राष्ट्रीय अतिथि गृह में आयोजित हुई। बैठक में सीटीके टीम के अलावा पीएचएफ के भारतीय निदेशक सचिन सचदेवा ने भी भाग लिया। बैठक में प्रपोजल विकास, टूल्स निर्माण और रिपोर्ट के प्रारूप पर चर्चाएं हुई और महत्वपूर्ण सुझाव प्राप्त हुये जिनसे परियोजना की दिशा तय करने में मदद मिली।

- **एनोटेशन** : इस दौरान 100 के करीब पुस्तकें, मॉड्यूल, नीति दस्तावेज, पेपर, आलेख, शोध रिपोर्ट आदि के आधार पर लगभग 40 एनोटेशन को पूरा किया गया। अभी इन एनोटेशन का प्रकाशन एवं हिन्दी में अनुवाद का काम बाकी है।

- **प्रपत्रों का विकास एवं पायलेटिंग** : तरु सदस्यों द्वारा कक्षा अवलोकन, सेवाकालीन और सेवापूर्व शिक्षक प्रशिक्षण साक्षात्कार इत्यादि प्रपत्र विकसित किये। सेवाकालीन प्रपत्रों का जयपुर के शिक्षक प्रशिक्षण तथा सेवापूर्व प्रपत्रों को गोनेर डीआईईटी की फैकल्टी के साथ परीक्षण किया गया। परीक्षण दौरान मिले सुझावों के आधार पर इन प्रपत्रों में अपेक्षित सुधार कर फील्ड में डेटा संकलन के लिए उपयोग में लिया।

- **कक्षा अवलोकन व साक्षात्कार** : तीन राज्यों के सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण शिविर (07), डीआईईटी (03) और निजी कॉलेज (03) में कक्षा अवलोकन किया तथा शिक्षक प्रशिक्षक से बातचीत कर सेवाकालीन एवं सेवापूर्व शिक्षक प्रशिक्षण संबंधी दस्तावेज एकत्र किए। तरु टीम ने शिक्षक प्रशिक्षण शिविर तथा कक्षाओं में रहकर वहां की गतिविधियों को अवलोकन किया। सदस्यों ने अवलोकन अनुभव आधारित दैनिक प्रतिवेदन भी लिखा। शिक्षक प्रशिक्षक के

साक्षात्कार दौरान संवाद का रिकॉर्ड किया गया था। अतः फील्ड कार्य पूरा करने के बाद बाहरी व्यक्ति से प्रतिलेखन भी तैयार करवाया।

- **सामग्री विश्लेषण कार्यशाला** : फील्ड से प्राप्त सामग्री हेतु नियम निर्धारण एवं विश्लेषण करने के लिए 11 से 20 अगस्त के दौरान कार्यशाला का आयोजन हुआ जिसमें चार विश्वविद्यालयों के रिसर्च स्कॉलर एवं सीटीके टीम सदस्यों ने भाग लिया। कार्यशाला में डीएड पाठ्यक्रम और सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण की संदर्शिकाओं को विश्लेषित करने का काम किया गया। इस दौरान आयोजित परिसंवादों का तरु ने समन्वयन एवं संचालन किया।

- **राष्ट्रीय परामर्श बैठक** : सीटीके के तत्वाधान में 11 जनवरी, 2013 को दिल्ली में एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन किया गया जिसमें ग्यारह राज्यों के लगभग 120 प्रतिनिधियों ने हिस्सेदारी की। सेमीनार में पहले तरु द्वारा शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। शोध रिपोर्ट पर सम्भागियों के सुझाव भी आए। सेमीनार में आगामी सम्भावनाओं पर विमर्श हुआ जिसमें शिक्षक प्रशिक्षण को बेहतर बनाने के लिए काम करने की जरूरत महसूस हुई।

- **पेपर प्रस्तुतीकरण** : जम्मू व जयपुर में आयोजित क्रमशः सेसी (CESI) तथा प्रॉव सेमीनार में तरु द्वारा 'शिक्षक ज्ञान' एवं 'शिक्षक के सीखने' पर आधारित पेपर का प्रस्तुतिकरण किया गया। सेमीनार में मिले सुझाव व फीडबैक से इस शोध रिपोर्ट को बेहतर बनाने में मदद मिली।

- **शोध रिपोर्ट को परिष्कृत करना** : फील्ड से अर्जित डेटा से विकसित इस शोध रिपोर्ट पर लोगों के सुझावों और फीडबैक के बाद रिपोर्ट पर पुनः काम करने की जरूरत हुई जिसमें रिपोर्ट के सात अध्याय बनाये गये तथा पूरी रिपोर्ट पर दोबारा से काम किया गया। इस रिपोर्ट में सम्पादकीय कार्य अभी जारी है।

- **कार्यक्रम के आगामी स्वरूप पर कार्यशाला** : इस कार्यक्रम के आगामी स्वरूप को विकसित करने के लिए एसीईआरटी गुडगांव (हरियाणा) में दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 05 राज्यों से एससीईआरटी और प्रत्येक राज्य की दो–दो डीआईईटी से कुल 22 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। संभागियों ने इस विचार की सराहना की और 'शिक्षक प्रशिक्षण' को बेहतर बनाने के लिए मिलकर काम करने का भरोसा दिलाया।

(ग) स्वतंत्र तौर पर आयोजित गतिविधियां

• **'शिक्षा की आधारभूत समझ' कार्यक्रम** : शिक्षा के सैद्धान्तिक ढांचे को समझने तथा उस पर विवेक संगत मत बना पाने का अवसर मुहैया कराते हुए कार्यक्रम अपने **08 वर्ष** पूरे कर चुका हैं। इस वर्ष फाउन्डेशन कोर्स के प्रचार–प्रसार में वृद्धि हुई है। कोर्स के लिए विकसित दस्तावेज (ब्रोशर, रंगीन पोस्टर व कलेंडर आदि) देशभर के लगभग 40 विश्वविद्यालयों और शिक्षा में अग्रणी संस्थानों को उपलब्ध कराए गए। सभी बारह कोर्स के मॉड्यूल के शिक्षाक्रम को विकसित व व्यवस्थित भी किया है। साथ ही कोर्स की अध्ययन सामग्री हिन्दी व अंग्रेजी भाषा में सयुक्तरूप विकसित की गई है। इस बार आठवें कोर्स के अन्तर्गत सितम्बर 2012 तथा जनवरी 2013 के दौरान **दो कार्यशालाएं** हुईं। इन कार्यशालाओं में शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक पहलुओं तथा विषय की प्रकृति को समझने के अलावा कुछ नीतियों एवं शोध कार्य पर विचार–विमर्श हुआ। देशभर की अलग–अलग जगह से **17 संभागियों** ने इस कार्यक्रम में हिस्सेदारी की। इस वर्ष से कोर्स में असाईनमेंट एवं मूडल (Moodle) के माध्यम से कार्यशालाओं के बाद भी अब सम्भागी निरन्तर संवाद करने के मंच प्राप्त कर पायेंगे।

• **राज्य सरकारों के साथ संवाद तथा अकादमिक मदद** : शुरुआत से ही तरु विभिन्न राज्य सरकारों के आमंत्रण पर शिक्षा में सामूहिक हित के कार्यक्रमों में हिस्सेदारी करता रहा है जिसमें प्रशिक्षण, शिक्षण सामग्री की समीक्षा व विकास इत्यादि शामिल हैं। इसके तहत वर्ष 2012–13 में किये गये काम इस प्रकार हैं–

- सर्व शिक्षा अभियान (एसएसए) राजस्थान द्वारा राज्य में नवनियुक्त शिक्षकों के अभिमुखीकरण की योजना बनाने के लिये बैठक आयोजित की। इस बैठक में तरु ने हिस्सेदारी कर प्रशिक्षण के लिये बनाये जा रहे ढांचे को निर्मित करने में मदद की।
- एससीईआरटी उदयपुर द्वारा प्रारम्भिक शिक्षा के लिये विकसित किये गये हिन्दी, इतिहास और पर्यावरण अध्ययन के पाठ्यक्रम की समीक्षा तरु टीम द्वारा की गई जिसमें पाठ्यक्रम की सामर्थ्य एवं चुनौतियों को रेखांकित किया गया।
- एससीईआरटी रायपुर (छतीसगढ) के अनुरोध पर शिक्षक प्रशिक्षण उन्मुखीकरण कार्यशाला में तरु हिस्सेदारी की तथा ज्ञान, शिक्षाक्रम और शिक्षणशास्त्र पर आयोजित सत्रों को संचालित एवं निर्देशित किया। इसके अलावा शिक्षक शिक्षा के लिये पत्राचार माध्यम से विकसित किये जा रहे कोर्स के लिये सामग्री विकास के कार्य में योगदान किया।
- होमी भाभा सेंटर फॉर साईंस एज्यूकेशन (HBCSE) द्वारा मुम्बई में आयोजित कन्सलटेशन मीट में तरु सम्भागियों ने भागीदारी की जिसमें बारां डीआईईटी के साथ रहे काम के अनुभवों को साझा किया गया। यह मीट मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सहयोग से डीआईईटी की क्षमतावर्धन की योजना बनाने के संदर्भ में की गई थी।

- हिमाचल प्रदेश के श्री कृष्णन के सहयोग एवं निर्देशन में फाउंडेशन कोर्स के लिये मूडल (moodle) विकसित करने के लिए कुछ प्रायोगिक कार्य शुरू किया है।
- तरु सम्भागी और दिगन्तर विद्यालय के शिक्षकों ने मिलकर शिक्षक दिवस मनाया जिसमें अनुभवों और चुनौतियों पर विमर्श हुआ। सीखने में एक–दूसरे की मदद की दृष्टि से यह प्रयास कारगर रहा।
- फैकल्टी विकास के मद्देनजर तरु सम्भागी ने **बदलते समाज में 'महिला और बच्चों पर हिंसा का प्रतिरोध'** विषय पर पेपर तैयार कर तमिलनाडु के पेरियार मणिम्माई विश्वविद्यालय में प्रस्तुत किया।

- तरु संभागी ने राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित सेमिनार में **'टकराती अस्मिताएं और महिला लेखन'** विषय पर भी पेपर प्रस्तुत किया।
- तरु सम्भागी को अम्बेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली द्वारा 'समाज विज्ञान की शिक्षा' पर आयोजित कार्यशाला में भागीदारी का मौका भी मिला।
- तरु के सदस्य को फरवरी–मार्च 2013 में आयोजित होने वाली आस्ट्रेलिया लीडरशिप अवार्ड फैलोशिप (ALFA) के बारहवें दौर के लिये अनुमोदित किया गया है परन्तु कुछ प्रशासनिक कार्यों के चलते यह प्रोग्राम नहीं हो पाया।
- तरु में कार्यकर्ताओं की कमी हमेशा रही है। इस वर्ष प्रयासों के परिणामस्वरूप तीन साथियों का चयन हुआ। इन सदस्यों की अभिमुखीकरण में तरु का योगदान रहा।
- तरु आरम्भ से शिक्षा में सार्थक बदलाव के लिए कोशिश करता रहा है इस वर्ष भी तरु ने नई परियोजना संकल्पना बनायी जिसमें–
  - सामाजिक विज्ञान में कक्षा के स्तर पर शिक्षण पद्धतियों के लिये शोध
  - ऑन लाइन टीचर एज्यूकेशन
  - सीटीके का आगामी स्वरूप

इसी तरह प्राथमिक कक्षा के शिक्षकों की शिक्षण अभ्यास पर पुनर्चिन्तन करते हुये शिक्षक अभ्यास को बदलने की मंशा के लिए तीन वर्ष का कार्यक्रम संकल्पित किया गया जिसे वॉटिस से सहमति भी मिल गई है। **अप्रैल 2013 से यह कार्यक्रम फागी में शुरू हो जायेगा।**

शिक्षा विमर्श

शिक्षा पर हिन्दी भाषा में प्रकाशित यह एक द्विमासिक पत्रिका है जिसकी **शुरूआत 1988 में** दिगन्तर ने अपने संसाधनों के साथ एक मासिक पत्रिका के रूप में की। शिक्षा के सैद्धान्तिक तथा व्यवहारिक पक्ष को महत्व देते हुए इस पत्रिका ने न केवल शिक्षा पर संवाद को बढ़ावा दिया है बल्कि हिन्दी पाठकों के लिए शिक्षा में साहित्य के अभाव को कम करने और गुणवत्तापूर्ण वैचारिक साहित्य मुहैया कराने का काम कर रही है।

वर्ष 2012–13 के दौरान 06 अंक प्रकाशित हुए हैं जिनमें **04 अंक** सामान्य और **एक अंक ''राजनीति का शिक्षणशास्त्र''** संयुक्तांक व विशेषांक के रूप में प्रकाशित हुआ हैं। इस विशेषांक में सुहास पल्शीकर, योगेन्द्र यादव, कृष्ण कुमार, अपूर्वानन्द, रोहित धनकर, मनीष जैन, अलेक्स एम. जॉर्ज, कुमकुम राय इत्यादि शिक्षाविदों और राजनीतिविदों ने अपना योगदान दिया हैं।

इस वर्ष भी शिक्षा विमर्श ने वित्तीय कठिनाईयों का सामना किया है। दिगन्तर ने अपने प्रयासों से सीमित संसाधनों के साथ पत्रिका का प्रकाशन नियमित जारी रखने की कोशिश की है। अजीमप्रेमजी फाउन्डेशन के साथ सतत संवाद के बावजूद वर्ष के अंत तक वित्तीय मदद की कोई रूपरेखा नहीं बन पायी। वित्तीय सहायता के अभाव के कारण प्रचार–प्रसार का काम प्रभावित हुआ है। वर्ष 2012–13 के दौरान शिक्षा विमर्श के **प्रचार–प्रसार** को संक्षेप में इस प्रकार देखा जा सकता है–

- विगत वर्ष की तुलना स्वरूप शिक्षा विमर्श की सदस्यता में **114** नए सदस्य शामिल हुए हैं। इस वर्ष के अंत में कुल सदस्य संख्या **1552** हो गई।
- तकनीकी परेशानी के कारण शिक्षा विमर्श की वेबसाईट में नया अंक अपलोड नहीं हो पाया। इस वर्ष वेबसाईट पर **पांच हजार** नये साथियों पंजीकरण करवाया हैं। वर्तमान में **सोलह हजार** सदस्य पंजीकृत हैं।
- संयुक्तांक व विशेषांक के साथ शिक्षा विमर्श सही समय पर प्रकाशित है।

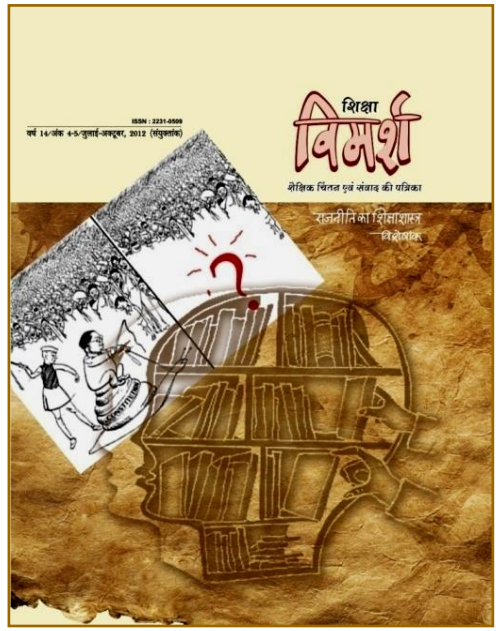

◈तुलनात्मक विश्लेषण◈

सदस्यता / वर्ष	2011–12	2012–13
मानद सदस्य इस दौरान	01	01
नए सदस्य	87	114
सदस्यता समाप्ति अब तक	393	547
सदस्यता वृद्धि	1352 से 1438	1439 से 1552
सदस्यता शुल्क प्राप्ति	2,17,416.00	2,75,183.00
वास्तविक सदस्य	878	1005

◈चुनौतियां◈

- वित्तीय अभाव के कारण शिक्षा विमर्श को एक नए रूप में प्रकाशित करने की योजना पर काम नहीं हो पाया।
- पत्रिका प्रचार–प्रसार के लिए कुछ विशेष काम नहीं हो पाया। परिणामस्वरूप सदस्यता में बढ़ोतरी अपेक्षा से काफी कम है।

◈विशेषताएं◈

- नवीनीकरण स्मरण पत्रों एवं सतत् सम्पर्क के फलस्वरूप शिक्षा विमर्श की सदस्यता शुल्क में **26.57 प्रतिशत** की वृद्धि हुई है।
- 'राजनीति का शिक्षणशास्त्र' विशेषांक में देश के जाने–माने शिक्षाविदों व राजनीतिविदों ने सहयोग प्रदान किया है।
- विगत वर्ष की भांति इस सत्र में भी पत्रिका का प्रकाशन समय पर हुआ है।

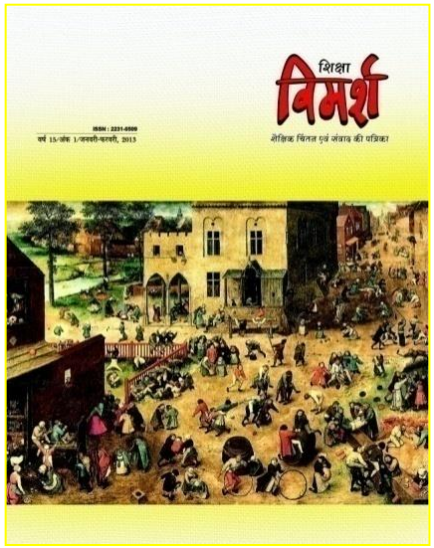

सन्दर्भ सहायता इकाई (TRSU)

TRSU दिगन्तर के सभी परियोजनाओं तथा कार्यक्रमों के लिए एक नींव प्रदान करता है जिससे संस्था के सभी कार्यक्रमों को उम्दा संचालन के लिए प्रशासनिक और व्यवस्थात्मक मदद मिलती है। इस इकाई के मुख्य कार्य में लेखांकन एवं वित्तीय प्रबन्ध के अलावा सामग्री खरीदना व उपलब्ध कराना, आवास व्यवस्था तथा संस्थागत सभी कार्मिकों का चयन व नियुक्त करना इत्यादि काम प्रमुखता में हैं। TRSU ने वर्ष 2012–13 में संस्था का नया ब्रोशर विकसित किया है। संस्था का वार्षिक प्रतिवेदन 2011–12 भी TRSU द्वारा तैयार किया गया। इस वर्ष दिगन्तर विद्यालय की मासिक, त्रैमासिक तथा वार्षिक प्रतिवेदन के अलावा विभिन्न कार्यशालाएं, आवासीय प्रशिक्षण एवं शैक्षिक भ्रमण की रपट तैयार करने का काम किया गया। TRSU की अलग–अलग शाखाओं द्वारा किये गए मुख्य काम व गतिविधियां का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

◈स्वागत◈

- सभी प्रकार के फोन की रजिस्टर और कम्प्यूटर में प्रविष्टि करना।
- फॉटोकॉपी, स्केन, फैक्स और कम्प्यूटर संबंधी कार्य।
- स्वागत कक्ष से संबंधित गतिविधियों के दस्तावेज रखना।

◈पुस्तकालय◈

- इस वर्ष लगभग 400 नई पुस्तकें खरीदी गई।
- पुस्तकालय की लगभग तेरह हजार पुस्तकों का व्यवस्थित अभिलेख रखना।
- मुख्य पुस्तकालय तथा दिगन्तर विद्यालय की पुस्तकों का भौतिक सत्यापन कर प्रतिवेदन तैयार करना।
- पुस्तकालय संबंधी कार्य की मासिक व वार्षिक प्रतिवेदन बनाना।

◈स्टोर◈

- स्थायी और अस्थायी सामग्री खरीदना और निगर्मन करना।
- संस्था के सभी कार्यक्रमों और कार्यालय की सामग्री का भौतिक सत्यापन करना।
- नये उपकरण खरीदना। पुराने उपकरण व सामग्री का सार–संभाल रखना।

◈कम्प्यूटर कार्य◈

- विभिन्न टंकण कार्य करना। जैसे– रपट, पत्रिका, पहचान कार्डस इत्यादि।
- संस्थागत पत्र एवं विभिन्न दस्तावेज का टंकण कार्य।
- दिगन्तर विद्यालय संबंधित रपट और विभिन्न टंकण कार्य।

◈लेखा संबंधी◈

- खाता बुक तैयार करना। जिसमें खाताबही, बैंक बुक, नकद बुक, अंतिम खाते इत्यादि।
- विभिन्न वित्तीय और ऑडिट रपट तैयार करना।
- संस्थागत कार्मिकों का वेतन बनाना और उसका रिकॉर्ड रखना।
- संस्थागत सभी कार्यक्रमों और गतिविधियों का खर्च विवरण का लेखा–जोखा रखना।

◈केम्पस मरम्मत और व्यवस्थितिकरण◈

- विभिन्न प्रशिक्षण, बैठकों और आगन्तुकों के लिए भोजन (चाय, नास्ता, लंच व रात्रि भोजन) की व्यवस्था उपलब्ध कराना।
- आगन्तुकों के ठहरने और रहने के लिए व्यवस्था मुहैया कराना।
- केम्पस के सभी कमरों की साफ–सफाई व सार–संभाल रखना।
- संस्थागत अन्य सभी कार्य– यात्रा आरक्षण, फॉटोकॉपी या बाजार संबंधी काम आदि समय पर पूरा करना।

प्रशिक्षण एवं कार्यशालाएं

इस वर्ष में निम्न वर्णित कार्यशालाएं एवं प्रशिक्षण में संभागियों के लिए रहने, खाने और आने–जाने संबंधी वाहन सुविधा इत्यादि व्यवस्था मुहैया की गई–

- दिगन्तर विद्यालय के लिए शिक्षक क्षमतावर्द्धन कार्यशालाएं **(05)**
- फाउन्डेशन कोर्स **(04)**
- APF के लिए कार्यशालाएं व शिक्षक प्रशिक्षण
- खेजड़ी सर्वोदय संस्थान के लिए कार्यशाला
- तरु द्वारा आयोजित कार्यशालाएं

दिगन्तर विद्यालय के अवलोकन एवं शिक्षण पद्धति को जानने के लिए इस वर्ष लगभग **32 संस्थाओं से कुल 246 लोग** विजिट पर आए जिनमें से प्रमुख संस्थाएं– CSER (मुम्बई), अजीमप्रेमजी फाउण्डेशन (बैंगलोर), मेलजोल (मुम्बई), TISS (मुम्बई), SCER (मुम्बई), Deptt. of Architecture (पुणे), अजीमप्रेमजी यूनिवर्सिटी (बैंगलोर), सेन्टक्रिसटोफर (यू.के.) TFI Follow (पुणे), मिराण्डा हाऊस (नई दिल्ली), AB फाउण्डेशन, Education Resource Society (Allahwad), बी.एल.एड. कॉलेज (नई दिल्ली व मुम्बई)।

◈संरचना◈

◈कार्मिकों का चयन◈

संस्थागत चयन प्रक्रिया अनुसार विभिन्न कार्यक्रम में नये कार्मिकों का चयन किया गया जिसमें विज्ञप्ति प्रकाशन, आवेदन का विश्लेषण, साक्षात्कार प्रक्रिया और अंतिम चयन इत्यादि काम किया गया। इस वर्ष नव चयनित कार्मिकों को विवरण निम्न है–

- **दिगन्तर विद्यालय** (06)
- **तरु** (03)
- **सन्दर्भ एवं सहायता इकाई** (02)

अन्य कार्यक्रम : DFID ग्लोबल स्कूल पार्टनरशिप कार्यक्रम

यह ब्रिटिश काउंसिल द्वारा संचालित एक शैक्षिक कार्यक्रम है जिसका मुख्य लक्ष्य शिक्षा के नवाचारों को विस्तृत दायरे में साझा करने और शिक्षकों की अकादमिक मदद के लिए सेतु विकसित करना है। कार्यक्रम सुचारू रूप से संचालन के लिए यह DFID (Department for International Development) द्वारा वित्तपोषित है। ब्रिटिश काउन्सिल के तहत विभिन्न जगह में अध्ययन उपरान्त उम्दा शिक्षा उद्देश्य व सिद्धान्त बतौर दिगन्तर विद्यालय का चयन किया गया। विद्यालय का अपने उद्देश्यों अनुरूप नियमित संचालन के अन्तर्गत एक समाहित हिस्से के रूप में यह साझेदारी है, जो वैश्विक विषयों और मुद्दों संबंधित शिक्षाक्रम व गतिविधियां के लिए विद्यालय के लम्बी अवधि के विकास की योजना है। यह कार्यक्रम विद्यालय प्रशासन द्वारा समर्थित है। विद्यालय प्रशासक इस साझेदारी समन्वयन समिति का सदस्य भी है। वर्ष 2004 में इस कार्यक्रम की शुरुआत हुई जिसके बाद से दिगन्तर शाला तथा लार्ड स्कूडामोर स्कूल (यू.के.) के मध्य सतत संवाद जारी है। वर्तमान कार्यक्रम से दिगन्तर विद्यालय के लगभग 509 बच्चे और शिक्षक लाभान्वित है। इस कार्यक्रम के विशिष्ट उद्देश्य इस प्रकार है–

- **वैश्विक विषयों और मुद्दों पर समझ के लिए संयुक्त पाठ्यक्रम/शिक्षाक्रम विकसित करना।**
- **शिक्षक प्रशिक्षण तथा क्षमतावर्द्धन को आपस में साझा करना।**
- **बच्चों को स्थानीय तथा वैश्विक स्तर पर ज्ञान, सहानुभूति और खुद व दूसरों की समझ बनाने के लिए सकारात्मक योगदान देने का अवसर मुहैया कराना।**

इस प्रयास के तहत **वर्ष 2012–13** के वित्तीय अनुदान हेतु पार्टनर स्कूल दिगन्तर विद्यालय भावगढ़ (राजस्थान, जयपुर) तथा लार्ड स्कूडोमोर स्कूल (यू.के.) ने मिलकर Connecting Classroom Application Form तैयार किया तथा ब्रिटिश काउंसिल U.K. प्रेषित किया।

इस साझेदारी को सशक्त व सक्रिय बनाने में मदद के लिए **पारस्परिक विजिट** की जाती है। इस सत्र में दिगन्तर विद्यालय से रविन्द्र सिंह **अप्रैल 2012** में लार्ड स्कूडोमोर स्कूल (यू.के.) गए। उन्होंने वहाँ बच्चों के साथ जादुई पहेली, मूकाभिनय, पारम्पारिक वाद्य यन्त्र बनाने, कूल्हड़ का वर्ली पेन्टिग तथा विभिन्न खेल पर काम किया। रविन्द्र जी ने यू.के. में पुराने व नये घर, चर्च तथा शैक्सपीयर का घर बर्मिघम शहर भी देखा।

उपलब्धियां तथा सम्भावनाएं

बच्चों व युवाओं में वैश्विक समस्याओं को प्रकाश में लाने तथा उनके समाधान के योग्य बनाने के लिए यह एक कारगर तरीका है। निसंदेह इस कार्यक्रम ने दोनों देशों के शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच मजबूत सम्बन्ध स्थापित करने में मदद की है। बच्चों ने स्थानीय व अन्य परिस्थितियों के बारे में जानने, उचित निर्णय लेने, अपने विचार व राय का विकास करने और दूसरों के मूल्यों व नजरिये को समझकर सराहना करना सीखा है। साथ ही बच्चों की रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए अधिक सम्भावना प्रदान करने में मदद मिली है। शिक्षण के दौरान शिक्षकों ने अब न केवल विभिन्न गतिविधियों का समावेश किया है बल्कि वैश्विक आयाम को प्रतिबिंबित करने वाली गतिविधियों को बढ़ावा देना प्रारम्भ किया हैं। **कार्यक्रम की उपलब्धियों में सबसे महत्त्वपूर्ण है–**

- विभिन्न विषय क्षेत्रों में उपयुक्त शिक्षण बिन्दुओं और गतिविधियों का समावेश कर शिक्षाक्रम का सम्वर्धन करना।
- नियमित ईमेल तथा दूरभाष द्वारा परस्पर संवाद और चर्चा ने भागीदारी व परस्पर सहयोग का रूप लिया है। नियमित आदान–प्रदान से न केवल शिक्षकों के विकास में मदद मिली है बल्कि शिक्षकों में पुस्तकों से इतर अन्य गतिविधियों की योजना निर्माण करने और उसके क्रियान्वयन की काबिलियत पैदा हुई है।
- समुदाय के साथ घनिष्ठ बातचीत ने दोनों देशों के विद्यार्थियों को अलग–अलग संस्कृति, मूल्यों, विश्वासों को जानने और इनका हमारे जीवन में प्रभाव व योगदान के बारे में पता करने में मदद की है।

हम चाहते हैं कि–

- कार्यक्रम को उच्च प्राथमिक स्तर के लिए बढ़ाया जाना चाहिए।
- पारस्परिक यात्रा का अवसर दोनों देशों के विद्यार्थियों के लिए भी हो।
- इस कार्यक्रम से मिली सीख/अनुभव को आस–पास विद्यालय के शिक्षकों के साथ साझा करने के लिए शिक्षकों व बच्चों के साथ शेयरिंग बैठक व कार्यशालाओं की कोई रूपरेखा बनायी जाय।
- साथी विद्यालयों द्वारा मिलकर वैश्विक मुद्दों/गतिविधियाँ पर संयुक्त शोध कार्य कर प्रकाशन की सम्भवनाएँ तलाशनी चाहिए।
- इस साझेदारी को जीवन्त व सशक्त बनाने हेतु बच्चे व शिक्षक के लिए कान्फ्रेंस सुविधा (वेब केमरा) की जरूरत महसूस होती है।

विकसित शिक्षण सामग्री

अब तक किये गये प्रयासों के परिणाम स्वरूप संस्था में प्राथमिक विद्यालय के लिए शिक्षाक्रम, शिक्षण सामग्री, प्रशिक्षण सामग्री एवं विभिन्न शोध रपट विकसित हुए हैं। इस वर्ष शिक्षा के अधिकार अधिनियम अनुसार प्राथमिक स्तर के लिए सतत व समग्र मूल्यांकन प्रपत्र विकसित किए गए। प्राथमिक समूह के लिए शिक्षण पैकेज, भाषा शिक्षण के लिए बच्चों के स्तरानुसार कहानियां, भाषा विश्लेषण सामग्री तथा उच्च प्राथमिक स्तर की अवधारणाओं के लिए विभिन्न चार्टस इत्यादि शामिल हैं।

(विस्तृत विवरण परिशिष्ट में संलग्न है।)

सहयोग एवं भागीदारी

उद्देश्यों अनुरूप गतिविधियों के क्रियान्वयन में मदद तथा वित्तीय योगदान के लिए निम्न साझेदारों को संस्था प्रोत्साहित करती है–

- अजीमप्रेमजी फाउन्डेशन, बैंगलोर
- आईसीआईसीआई फाउन्डेशन
- विप्रो, बैंगलोर
- पॉल हैम्लेन फांउडेशन, लंदन

गतिविधियों की संकल्पना/क्रियान्वयन में संगी संस्थान की भागीदारी–

- एकलव्य, भोपाल
- विद्याभवन सोसायटी, उदयपुर
- होमी भाभा सेन्टर फॉर साइंस एज्युकेशन, मुम्बई
- जीसस एण्ड मेरी कॉलेज, नई दिल्ली
- सेंट क्रिस्टोफर स्कूल, लंदन
- एसआईजी–आईसीआईसीआई फाउन्डेशन, मुम्बई
- अजीम प्रेमजी फाउन्डेशन, बैंगलोर
- एनसीईआरटी, नई दिल्ली
- एससीईआरटी, रायपुर
- दूसरा दशक, जयपुर

दिगन्तर संरचना 2012–13

◈कार्यकारी समिति◈

दिगन्तर पूर्ण रूप से विकेंद्रीकृत प्रबन्ध प्रणाली तथा अकादमिक एवं प्रशासनिक कार्यकर्ताओं के सहयोग से सचिव और निदेशक द्वारा संचालित है। कार्यकारी समिति के सदस्य विवरण इस प्रकार है–

क्रमांक	नाम	विवरण
1.	डॉ. शारदा जैन	अध्यक्ष
2.	सुश्री जाने हिम्मत सिंह	उपाध्यक्ष
3.	श्री रोहित धनकर	सचिव
4.	श्री आर. एस. झाला	कोषाध्यक्ष
5.	सुश्री रीना दास	आजीवन सदस्य
6.	सुश्री कविता श्रीवास्तव	सदस्य

◈जनरल बॉडी◈

क्रमांक	नाम	क्रमांक	नाम
1.	डॉ. शारदा जैन	11.	सुश्री जी.जे. उन्नीथान
2.	श्री रोहित धनकर	12.	श्री पुरनेन्दु कावूरी
3.	श्री आर. एस. झाला	13.	श्री प्रदीप भार्गव
4.	सुश्री रीना दास	14.	सुश्री कविता श्रीवास्तव
5.	प्रो. कृष्ण कुमार	15.	श्री सवाई सिंह शेखावत
6.	श्री जे.पी. सिंह	16	श्री ए. के. जैन
7.	सुश्री गंगा सिंह	17.	सुश्री पारुल मित्तल
8.	सुश्री जाने हिम्मत सिंह	18.	सुश्री शिखा कासलीवाल लोढ़ा
9.	श्री सुरेन्द्र कुशवाह	19.	*श्री अनिल बोर्डिया
10.	सुश्री पी. एन. कावूरी		

*श्री अनिल बोर्डिया अब हमारे बीच नहीं हैं। 79 वर्ष की उम्र में उनका देहावसान 03 सितम्बर 2012 को हुआ। वे शिक्षा के लिए समर्पित रहे और दिगन्तर के साथ उनका लम्बा आत्मीय जुड़ाव रहा।

परिशिष्ट (शिक्षण सामग्री, कार्यकर्ता, वित्तीय विवरण तथा दिगन्तर पहुँचना)

◈शिक्षण सामग्री विवरण◈

(अ) प्राथमिक विद्यालय के लिए शिक्षण सामग्री

- भाषा आरंभिक गतिविधियां
- शब्द चित्र कार्ड सैट
- मात्रा कार्ड सैट
- हिन्दी पोथी (पहली, दूसरी, तीसरी व चौथी)
- हिन्दी भाषा विकास शृंखला (01 से 12)
- हिन्दी नई पुस्तक सैट (पहली, दूसरी, तीसरी व चौथी)
- शिक्षक की पुस्तक भाषा
- गणित आरंभिक गतिविधियां
- गणित बोध (01 से 15)
- पर्यावरण अध्ययन आरंभिक गतिविधियां
- पर्यावरण अध्ययन (अपने आस–पास 01 से 05)
- हम सब
- तब अब और आगे
- जंगल की सभा
- शिक्षा विमर्श (द्वि–मासिक पत्रिका)
- शिक्षा और समझ, लेखक–रोहित धनकर, आधार प्रकाशन, पंचकुला हरियाणा
- लोकतंत्र शिक्षा और विवेकशीलता, सम्पादित– रोहित धनकर, आधार प्रकाशन, पंचकुला (हरियाणा)
- शिक्षा के संदर्भ और विकल्प, सम्पादित– रोहित धनकर और राजाराम भादू, आधार प्रकाशन, पंचकुला (हरियाणा)

(ब) प्रशिक्षण सामग्री

- प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण की रूपरेखा
- शिक्षा और समझ
- शिक्षाक्रम प्रथम प्रारूप
- पर्यवेक्षक प्रशिक्षण संदर्भ संदर्शिका (प्रारूप)
- शिक्षक प्रशिक्षण संदर्भ संदर्शिका (प्रारूप)
- Therotical Basis of Alternative Elementary Education
- Language Teaching at Digantar
- शिक्षा सिद्धान्त और व्यवहार आधारित कार्यशाला रपट दिसम्बर, 2003
- पहचानशाला, महिला शिक्षक प्रशिक्षण–दिसम्बर 2002
- समुदाय सहयोग कार्यक्रम, पहचान में समुदाय सहयोग– एक रपट
- राजकीय प्राथमिक शिक्षक सहयोग, पहचान में प्राथमिक विद्यालय में अकादमिक मदद– एक रपट
- पहचानशाला में बालिकाओं के शैक्षिक स्तर मूल्यांकन और विश्लेषण– एक रपट
- प्राथमिक शिक्षा में सिद्धान्त और व्यवहार–2005
- विकास क्रम एवं गतिविधियां– 0 से 5 वर्ष तक के बच्चों के लिए
- शिक्षाक्रम–कला
- पुस्तकालय अभिव्यक्ति क्षमता विकास कार्यशाला– एक रपट
- पुस्तकालय, बच्चे और हम– पुस्तकालय कार्यक्रम रपट 2007
- सफरनामा– शिक्षा समर्थन परियोजना रपट 2012

(स) शोध अध्ययन रपट

- केरल में गतिविधि आधारित शिक्षण और उपलब्धियां– मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय, भारत सरकार के लिए प्राथमिक शिक्षा विकास कार्यक्रम में शिक्षाशास्त्रीय हस्तक्षेप का एक अध्ययन
- उरमूल शिक्षा समिति बज्जू के लिए बालिका शिविर का एक अध्ययन
- केयर इण्डिया और दिगन्तर द्वारा राजस्थान के ग्रामीण स्कूलों में गुणवत्ता की खोज
- राजस्थान के टोंक जिले में प्राथमिक शिक्षा– एक रपट
- राजस्थान में विगत दशक शिक्षा में बदलाव– एक आधार पत्र

◈दिगन्तर विद्यालय (प्राथमिक से उच्च माध्यमिक)◈

क्रमांक	कार्यकर्ता	जन्मतिथि	लिंग	शैक्षिक योग्यता	दिगन्तर अनुभव (वर्षों में)	अन्य अनुभव (वर्षों में)	पदनाम
1.	अब्दुल गफ्फार	01 जुलाई 1965	पुरुष	एम.ए. बी. एड.	18 वर्ष 06 माह	–	कार्यकारी निदेशक
2.	अभिलाषा पुरूषोत्तमन्	05 अक्टूबर 1981	महिला	एम.ए. पीजीडीसीए	01 वर्ष 09 माह	–	व्यवस्था समन्वयक
3.	अनिल कुमार शर्मा	14 जुलाई 1987	पुरुष	बी.ए. (बी. एड.शिक्षाशास्त्री)	01 वर्ष 07 माह	03 वर्ष	प्राथमिक शिक्षक
4.	अनिता शर्मा	03 दिसम्बर 1980	महिला	एम.ए. बी. एड.	01 वर्ष 02 माह	04 वर्ष	हिन्दी शिक्षक (उच्च माध्यमिक)
5.	धर्मेन्द्र कुमार स्वर्णकार	30 अगस्त 1980	पुरुष	बी. कॉम. पीजीडीसीए	01 वर्ष 03 माह	06 वर्ष	कार्यालय प्रभारी
6.	घनश्याम कुम्हार	07 जनवरी 1980	पुरुष	एम.ए. बी. एड.	05 वर्ष 02 माह	05 वर्ष 06 माह	प्राथमिक शिक्षक
7.	हरीश शर्मा	19 जुलाई 1976	पुरुष	एम.ए. बी. एड.	05 वर्ष 08 माह	03 वर्ष	प्राथमिक शिक्षक
8.	हेमन्त कुमार शर्मा	01 जुलाई 1975	पुरुष	एम.ए. बी. एड.	09 वर्ष 03 माह	04 वर्ष	अकादमिक समन्वयक (प्राथमिक)
9.	हेमराज सेन	05 अप्रैल 1976	पुरुष	एम.ए. बी. एड.	02 वर्ष 01 माह	10 वर्ष	प्राथमिक शिक्षक
10.	इमरान	31 जुलाई 1982	पुरुष	बी.ए. (द्वितीय वर्ष)	08 वर्ष 03 माह	–	विद्यालय सहायक
11.	जगदीश नारायण	16 जुलाई 1960	पुरुष	बी.ए. (द्वितीय वर्ष)	19 वर्ष 05 माह	05 वर्ष	कॉरपेन्ट्री शिक्षक
12.	जगदीश प्रसाद शर्मा	30 जून 1978	पुरुष	एम.ए. बी. एड.	01 वर्ष 07 माह	06 वर्ष	प्राथमिक शिक्षक
13.	लोकेश खण्डेलवाल	06 जनवरी 1988	पुरुष	बी. कॉम.	03 वर्ष	–	स्टोर प्रभारी
14.	लुबना इफ्फत	04 अप्रैल 1988	महिला	बी.ए. बी.एड.	01 वर्ष 07 माह	07 वर्ष	प्राथमिक शिक्षक

				बीएसटीसी		06 माह	
15.	मंजु	08 सितम्बर 1977	महिला	एम.ए. बी. एड.	12 वर्ष 02 माह	12 वर्ष 06 माह	प्राथमिक शिक्षक
16.	मोहम्मद शोएब	16 मई 1982	पुरुष	एम.ए. बी. एड.	02 वष 10 माह	05 वर्ष 06 माह	उर्दू शिक्षक (उच्च प्राथमिक)
17.	नन्द किशोर गुर्जर	13 अगस्त 1980	पुरुष	एम.ए. बी. एड.	01 वर्ष 07 माह	04 वर्ष	चित्रकला शिक्षक
18.	नारायण सिंह राठौड़	01 नवम्बर 1977	पुरुष	10 वीं	01 वर्ष 09 माह	–	चौकीदार
19.	नाथू लाल जांगिड़	20 अगस्त 1986	पुरुष	09 वीं	03 वर्ष 10 माह	–	कॉरपेन्ट्री सहायक
20.	नौरतमल पारीक	05 अगस्त 1968	पुरुष	बी.ए.	19 वर्ष 05 माह	–	शाला समुदाय समन्वयक
21.	प्रवीण कुमार पांचाल	05 जनवरी 1984	पुरुष	एम.ए. बी. एड.	06 वर्ष	04 वर्ष	प्राथमिक शिक्षक
22.	प्रवीण जैन	06 जून 1974	पुरुष	एम.ए. बी. एड.	01 वर्ष 07 माह	12 माह	अंग्रेजी शिक्षक
23.	प्रदीप कुमार वर्मा	06 सितम्बर 1984	पुरुष	एम.ए. (संगीत)	01 वर्ष 07 माह	01 वर्ष 06 माह	संगीत शिक्षक
24.	प्रेमचंद परसोया	20 दिसम्बर 1975	पुरुष	बी.ए. (द्वितीय वर्ष)	04 वर्ष 01 माह	–	स्वास्थ्य सहायक
25.	पुष्पेन्द्र कुमार तोमर	26 जून 1979	पुरुष	एम.एससी. बी.एड.	01 वर्ष 07 माह	03 वर्ष	विज्ञान शिक्षक (उच्च माध्यमिक)
26.	पवन कुमार	26 अगस्त 1986	पुरुष	एम.ए.	04 वर्ष 11 माह	–	सामाजिक अध्ययन शिक्षक (उच्चप्राथमिक–माध्यमिक)
27.	रचना चौधरी	29 मई 1976	महिला	एम.ए. बी. एड.	02 वर्ष 08 माह	–	समाजशास्त्र शिक्षिका (उच्च माध्यमिक)
28.	रामजीलाल गुर्जर	09 अगस्त 1963	पुरुष	एम.ए. बी. एड.	18 वर्ष 05 माह	–	प्राथमिक शिक्षक
29.	रमेश चन्द	24 जुलाई 1967	पुरुष	एम.ए.	23 वर्ष 04 माह	–	प्राथमिक शिक्षक
30.	रवीन्द्र सिंह मान	20 जुलाई 1984	पुरुष	बी.ए.	04 वर्ष 04 माह	03 वर्ष	प्राथमिक शिक्षक (उच्च प्राथमिक)
31.	रेखा जैन	10 जून 1982	महिला	एम.ए. बी. एड.	06 वर्ष 04 माह	07 वर्ष 06 माह	प्राथमिक शिक्षक
33.	रोहित गुप्ता	13 नवम्बर 1983	पुरुष	एम. कॉम.	04 वर्ष 09 माह	05 वर्ष	लेखाकार
33.	संजीव कुमार जैन	13 अक्टूबर 1975	पुरुष	एम.ए. बी. एड.	05 वर्ष 07 माह	07 वर्ष	अकादमिक समन्वयक (उच्च प्राथमिक)
34.	समुन्दर सिंह सैंगर	10 मई 1980	पुरुष	एम.ए. डी. सी.ए.	07 वर्ष 07 माह	02 वर्ष 06 माह	विज्ञान शिक्षक (उच्चप्राथमिक–माध्यमिक)
35.	उम्मेदसिंह	03 दिसम्बर 1980	पुरुष	8 वीं	01 वर्ष	–	चौकीदार

					08 माह		
36.	वेद प्रकाश शर्मा	11 जुलाई 1983	पुरुष	बी. एससी. बी.एड.	05 वर्ष 08 माह	03 वर्ष	प्राथमिक शिक्षक
37.	विमलेश शर्मा	16 जुलाई 1974	पुरुष	एम.ए. बी. एड.	01 वर्ष 07 माह	12 वर्ष	अकादमिक समन्वयक (उच्च माध्यमिक)
38.	वीरेन्द्र सिंह	10 मई 1988	पुरुष	बी. कॉम.	04 माह	–	शाला केयर टेकर (प्रवीक्षाकाल)
39.	विवेक सिंह राठौड़	07 फरवरी 1974	पुरुष	एम.ए. बी.एड.	06 वर्ष 03 माह	03 वर्ष	प्राथमिक शिक्षक
40.	सादात इस्लाम	12 मई 1987	महिला	बी. फार्मेसी	06 माह	–	स्वास्थ्य प्रभारी (प्रवीक्षाकाल)
41.	राधेश्याम बैरवा	10 अगस्त 1976	पुरुष	एम.एस.सी.	06 माह	5 वर्ष	प्रयोगशाला प्रभारी
42.	राजेश शर्मा	30 जून 1977	पुरुष	बी. एससी. बी. एड.	08 माह	3 वर्ष	गणित शिक्षक (अस्थाई)
43.	साबिर खान	20 अप्रेल 1989	पुरुष	बी.ए. (बी. एड.)	04 माह	5 वर्ष	प्रशिक्षु
44.	अनुराधा शर्मा	10 अक्टूबर 1983	महिला	बी.ए. (एम. एड.)	04 माह	4 वर्ष	प्रशिक्षु
45.	कौशलेन्द्र सिंह	02 फरवरी 1977	पुरुष	बी.ए. (एम. एड.)	09 माह	12 वर्ष	प्राथमिक शिक्षक

◈अकादमिक सन्दर्भ इकाई (तरु)◈

क्रमांक	कार्यकर्ता	जन्मतिथि	लिंग	शैक्षिक योग्यता	दिगन्तर अनुभव (वर्षों में)	अन्य अनुभव (वर्षों में))	पदनाम
1.	देवयानी भारद्वाज	13 दिसम्बर 1972	महिला	एम.ए.	03 वर्ष 02 माह		एसोसिएट फैलो
2.	जयनारायण मीणा	15 फरवरी 1987	पुरुष	8 वीं	02 वर्ष 06 माह		कार्यालय सहयोगी
3.	कुलदीप गर्ग	09 फरवरी 1977	पुरुष	एम.ए. पीएचडी	06 वर्ष 04 माह	06 वर्ष	एसोसिएट फैलो
4.	अदिति रविकृष्णन	24 फरवरी 1987	महिला	एम.ए.	09 माह		एसोसिएट फैलो (प्रवीक्षाकाल)
5.	आबिद खान	25 नवम्बर 1990	पुरुष	बी.काम.	04 माह	04 वर्ष	कार्यकारी सहायक (प्रवीक्षाकाल)
6.	निशी खण्डेलवाल	16 जनवरी 1981	महिला	एम.एससी.	03 वर्ष 02 माह	04 वर्ष	सहायक फैलो
7.	राजेश कुमार	07 नवम्बर 1965	पुरुष	एम.ए. पीएचडी	04 वर्ष 03 माह	22 वर्ष	कार्यकारी निदेशक
8.	सुधीर सिंह	02 जनवरी 1974	पुरुष	एम.ए.	06 वर्ष	10 वर्ष	एसोसिएट फैलो
9.	वन्दना सिंह भाटिया	06 जनवरी 1976	महिला	एम.एससी. एम.एड.(शिक्षा), एम.एस.डब्ल्यू. नेट	03 वर्ष 02 माह	02 वर्ष	सहायक फैलो

◈सन्दर्भ सहायता इकाई (TRSU)◈

क्रमांक	कार्यकर्ता	जन्मतिथि	लिंग	शैक्षिक योग्यता	दिगन्तर अनुभव (वर्षों में)	अन्य अनुभव (वर्षों में))	पदनाम
1.	सत्यनारायण कुमावत	11 नवम्बर 1977	पुरुष	एम.ए.	06 माह	10 वर्ष	कार्यकारी सहायक
2.	अर्जुन लाल बलाई	11 अक्टूबर 1957	पुरुष	08 वीं	04 वर्ष	10 वर्ष	चौकीदार
3.	भगवानसहाय शार्मा	05 मई 1987	पुरुष	बी.ए.	05 वर्ष	03 वर्ष	स्वागतकर्ता कम कम्प्यूटर ऑपरेटर
4.	ज्ञान प्रकाश रैगर	17 मई 1984	पुरुष	9 वीं	02 वर्ष 10 माह	03 वर्ष	सहायक रसोईया
5.	हरिनारायण करोल	15 सितम्बर 1963	पुरुष	बी. कॉम.	23 वर्ष 03 माह	–	मुख्य लेखाकार
6.	कालूराम गुर्जर	05 अक्टूबर 1991	पुरुष	तीसरी पास	01 वर्ष 05 माह	07 वर्ष	चौकीदार
7.	केशव कुमार गौतम	01 जुलाई 1970	पुरुष	बी. ए.सी लिब.	14 वर्ष 09 माह	–	पुस्तकालय प्रभारी
8.	मुकेश	16 जून 1986	पुरुष	7 वीं	03 वर्ष	–	कार्यालय सहयोगी
9.	मुकेश शर्मा	16 जनवरी 1981	पुरुष	9 वीं	03 वर्ष	01 वर्ष 06 माह	कार्यालय सहयोगी
10.	मूलचंद गुर्जर	04 जुलाई 1984	पुरुष		01 वर्ष 07 माह		रसोईया सहायक
11.	मुन्ना खां	26 अक्टूबर 1964	पुरुष	–	07 वर्ष 01 माह	02 वर्ष	माली
12.	नीरज भट्ट	30 दिसम्बर 1965	पुरुष	बी. कॉम. पीजीडीसीए	17 वर्ष 06 माह	02 वर्ष	कम्प्यूटर ऑपरेटर
13.	प्रदीपकुमार पारीक	04 अप्रैल 1985	पुरुष	एम.कॉम.	03 वर्ष 07 माह	–	स्टोर सहायक
14.	पुष्कर सिंह उरियाल	11 जनवरी 1974	पुरुष	08 वीं	16 वर्ष 04 माह	03 माह	केम्पस प्रभारी कम रसोईया
15.	राजेन्द्र कुमार रावत	31 अगस्त 1974	पुरुष	बी. कॉम.	09 वर्ष 09 माह	03 वर्ष 06 माह	लेखाकार
16.	राजू गुर्जर	07 मई 1980	पुरुष	एम.ए.	05 वर्ष 05 माह	02 वर्ष 02 माह	पुस्तकालय सहायक
17.	रामदयाल शर्मा	07 नवम्बर 1984	पुरुष	बी. ए.	08 वर्ष 03 माह	–	स्टोर प्रभारी
18.	महेश कुमार शर्मा	15 दिसम्बर 1990	पुरुष	बी. कॉम.	06 माह	02 वर्ष	लेखा सहायक
19.	रीना दास	21 जून 1952	महिला	एम.ए.	34 वर्ष	09 वर्ष	निदेशक
20.	सत्य प्रकाश जोशी	23 अक्टूबर 1978	पुरुष	बी. ए. पीजीडीसीए	06 वर्ष 08 माह	03 वर्ष	कम्प्यूटर ऑपरेटर
21.	विश्राम कुमार शर्मा	18 अगस्त 1976	पुरुष	12 वीं	10 वर्ष 06 माह	05 वर्ष	कार्यालय केयर टेकर
22.	अशोक कुमार शर्मा	12 अप्रैल 1976	पुरुष	एम. ए.	16 वर्ष 06 माह	–	एसोसियट फैलो

◈शिक्षा विमर्श◈

क्रमांक	कार्यकर्ता	जन्मतिथि	लिंग	शैक्षिक योग्यता	दिगन्तर अनुभव (वर्षों में)	अन्य अनुभव (वर्षों में))	पदनाम
1.	ख्यालीराम स्वामी	20 जुलाई 1978	पुरुष	एम.ए. डीसीए	09 वर्ष 04 माह	04 वर्ष	प्रसार प्रबंधक
2.	विश्वंभर	15 जनवरी 1974	पुरुष	एम.ए.	10 वर्ष 10 माह	06 वर्ष 06 माह	सम्पादक

◈सेन्टर फॉर टीचर नॉलेज (CTK) कार्यक्रम◈

क्रमांक	कार्यकर्ता	जन्मतिथि	लिंग	शैक्षिक योग्यता	दिगन्तर अनुभव (वर्षों में)	अन्य अनुभव (वर्षों में)	पदनाम
1.	कैलाश चन्द मीणा	20 दिसम्बर 1971	पुरुष	8 वीं	01 वर्ष 11 माह	–	कार्यालय सहयोगी
2.	निशा गुप्ता	20 नवम्बर 1980	महिला	एम.एससी.	05 वर्ष 02 माह	02 वर्ष	रिसर्च एसोसियट
3.	योगेन्द्र कुमार दाधीच	04 मई 1979	पुरुष	एम.ए. पीजीडीसीए	07 वर्ष 01 माह	05 वर्ष	रिसर्च एसोसियट

दिगन्तर पहुँचना

जयपुर से– पहले जगतपुरा (जयपुर) रेल्वे फाटक पहुँचिए। रेलवे फाटक को पार किये बिना, रेलवे पटरी के समान्तर बांयी तरफ खोनागोरियान सड़क पर आएं। सड़क के साथ लगभग 1.75 किलोमीटर चलते हुए ग्रीनवुड अपार्टमेंट के पास बांयी ओर घुम जाएं। इस अपार्टमेंट के सामने ही एक कच्चा रास्ता ढलान में उतरता दिखाई देगा। इस रास्ते पर उतरते ही आप हिन्दी भाषा में "दिगन्तर" लिखा हुआ बोर्ड पायेंगे। बोर्ड के साथ ही दांई ओर कच्चा रास्ता है जिस पर लगभग 200 मीटर की दूरी चलिए। अब आप दिगन्तर में है।

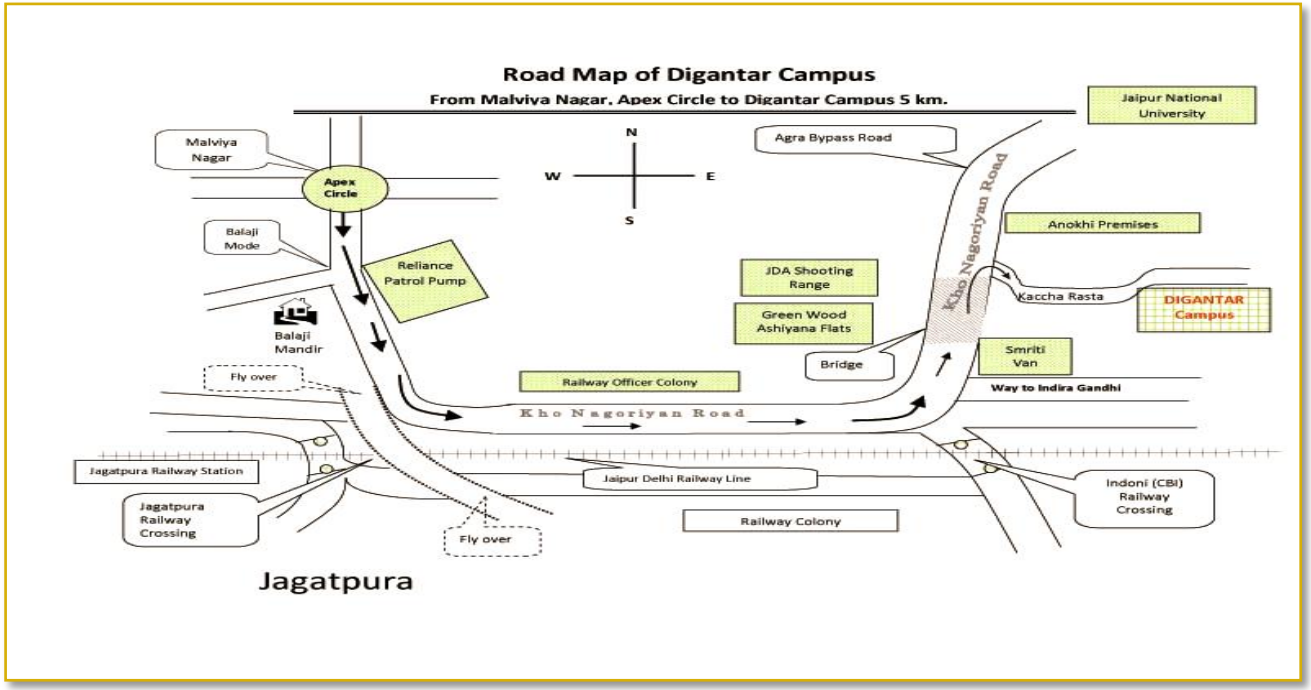

दिगन्तर वेबसाईट : दिगन्तर वेबसाईट 2006 से प्रारम्भ है। जो नियमित रूप से अपडेट हुई है। उम्मीद है कि हमारी विभिन्न कार्यक्रम और उनकी गतिविधियों की जानकारी प्रसारित करने में यह वेबसाईट अपनी उपयोगिता को सिद्ध कर पायेगी। हमारी वेबासाईट : **www.digantar.org**

दिगन्तर शिक्षा एवं खेलकूद समिति

टोडी रमजानीपुरा, खो–नागोरियान रोड़, जगतपुरा, जयपुर–302017

फोन : + 91–0141–2750230, 2750310 **फैक्स** : + 91–0141–2751268

ईमेल : reenadasroy@gmail.com **फोन** : 09414054047 **(निदेशक)**

digantarvidyalay@gmail.com **Web:** www.digantar.org